# राज्य, वाचाएँ और पुराने नियम का कैनन

## अध्याय 1

## पुराने नियम का अध्ययन क्यों करें?

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

## थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

**संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।**

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

# विषय-वस्तु


परिचय ..... 1
दूरी ..... 2
**कारण** ..... **2**
जैविक प्रेरणा ..... 2
ईश्वरीय समायोजन ..... 3
**प्रकार** ..... **5**
धर्मवैज्ञानिक ..... 5
सांस्कृतिक ..... 6
व्यक्तिगत ..... 7
प्रासंगिकता ..... 8
**यीशु की शिक्षाएँ** ..... **8**
नकारात्मक टिप्पणियाँ ..... 8
सकारात्मक  कथन ..... 12
**पौलुस की शिक्षाएँ** ..... **13**
नकारात्मक टिप्पणियाँ ..... 14
सकारात्मक  कथन ..... 15
वर्तमान प्रयोग ..... 17
**चुनौतियाँ** ..... **17**
प्राचीन संसार ..... 18
ऐतिहासिक विकास ..... 19
हमारा संसार ..... 20
**संपर्क** ..... **20**
वही परमेश्वर ..... 21
वही संसार ..... 23
वही लोग ..... 25
**विकास** ..... **27**
युग-संबंधी ..... 27
सांस्कृतिक ..... 29
व्यक्तिगत ..... 30
उपसंहार ..... 30




चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

# राज्य, वाचाएँ और पुराने नियम का कैनन

अध्याय 1

पुराने नियम का अध्ययन क्यों करें?

## परिचय

यदि हमें ऐसे लोगों से जो पारंपरिक यहूदी या मसीही पृष्ठभूमि के न हों यह पूछना हो, "किसी को पुराने नियम का अध्ययन क्यों करना चाहिए?" तो अधिकतर लोग शायद ऐसा कुछ कहेंगे : "पुराना नियम इतना पुराना और अप्रासंगिक है कि यह बिल्कुल पढ़ने लायक नहीं है।" अब मसीह के अनुयायियों के रूप में, हम पुराने नियम को परमेश्वर के वचन के रूप में ग्रहण करते हैं। यह पवित्र ग्रंथ है। परंतु यह कितना भी आश्चर्यजनक क्यों न लगे, जब हम मसीहियों से भी यह पूछते हैं, "हमें पुराने नियम का अध्ययन क्यों करना चाहिए?" तो हममें से कुछ लोग यह कहेंगे, "यहाँ-वहाँ कुछ चीजें हैं जो आज भी हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं।" परंतु अक्सर कुछ अच्छे मसीही भी यह कहते हैं, "पुराना नियम इतना पुराना है कि यह बिल्कुल पढ़ने लायक नहीं है।" तो आज मसीह के अनुयायियों को पुराने नियम का अध्ययन क्यों करना चाहिए?

यह अध्याय हमारी श्रृंखला राज्य, वाचाएँ और पुराने नियम का कैनन में पहला अध्याय है — यह ऐसी श्रृंखला है जो परमेश्वर के राज्य और वाचाओं के विषयों को खोजती है और यह भी कि इन विषयों को पुराने नियम के कैनन की पुस्तकों में कैसे लागू किया जाता है। यह पहला अध्याय एक महत्वपूर्ण आरंभिक प्रश्न को संबोधित करेगा : “पुराने नियम का अध्ययन क्यों करें?” मसीह के आधुनिक अनुयायियों को बाइबल के इस भाग में रुचि क्यों होनी चाहिए? हमें इन प्राचीन शास्त्रों का अध्ययन करने के कार्य में स्वयं को क्यों समर्पित करना चाहिए?

शुरू में ही हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि पुराने नियम का अध्ययन करना संसार का सबसे आसान काम नहीं है। यह विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण है क्योंकि पुराने नियम के कैनन में विभिन्न लेखकों द्वारा लिखी गई कई पुस्तकें पाई जाती हैं, जिन्होंने लगभग 1000 वर्षों की अवधि में विभिन्न ऐतिहासिक परिस्थितियों को संबोधित किया है। परंतु जैसा कि हम इस श्रृंखला में देखेंगे, जब हम एक बात का एहसास कर लेते हैं तो हम बड़ी प्रगति कर सकते हैं : ये सब पुस्तकें आधारभूत मान्यताओं की एक व्यवस्था पर टिकी हुई हैं जिसे पुराने नियम के सब लेखक मानते थे। उन सब का मानना था कि परमेश्वर ने इस्राएल के साथ अपने संबंध को उन नीतियों के द्वारा संचालित किया जो उसने अपनी वाचाओं के द्वारा स्थापित की थीं। और इससे बढ़कर, उनका यह भी मानना था कि ये वाचाएँ इतिहास के लिए परमेश्वर के बड़े लक्ष्य को पूरा करने के लिए बनाई गई थीं — और वह लक्ष्य था पूरी सृष्टि को परमेश्वर के राज्य में बदलकर परमेश्वर को महिमा देने का। पुराने नियम के लेखकों ने पुराने नियम के कैनन की पुस्तकों में विशिष्ट स्थितियों को संबोधित करते हुए परमेश्वर के राज्य और उसकी वाचाओं से अपनी आधारभूत मान्यताओं को लिया।

जब हम यह प्रश्न पूछते हैं, "पुराने नियम का अध्ययन क्यों करें?" तो हम तीन मुख्य विषयों पर ध्यान केंद्रित करेंगे। सबसे पहले, हम यह मानेंगे कि पुराने नियम से हमें अलग करनेवाली दूरी के कारण हमें अध्ययन के लिए स्वयं को समर्पित करना चाहिए। दूसरा, हम देखेंगे कि हमारे समय के लिए पुराने नियम के पवित्रशास्त्र की प्रासंगिकता के कारण मसीह के अनुयायियों को यह कार्य करना चाहिए। और तीसरा, हम यह खोजेंगे कि पुराने नियम को अपने जीवन में ज़िम्मेदारी के साथ लागू करने के लिए हमें इसका अध्ययन क्यों करना चाहिए। आइए हम इस वास्तविकता के साथ शुरु करें कि पुराने नियम का पवित्रशास्त्र अक्सर हमें हमसे बहुत दूर प्रतीत होता है।



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

# दूरी

बाइबल के छात्र जब पुराने नियम का अध्ययन करना शुरू करते हैं तो वे अक्सर समान, पूर्वानुमेय प्रक्रिया से होकर गुजरते हैं। हमें सही ढंग से सिखाया गया है कि पुराना नियम परमेश्वर का त्रुटिरहित और प्रेरणा-प्राप्त वचन है, इसलिए हममें से कई लोग मानते हैं कि इन वचनों में ऐसी शिक्षाएँ होनी चाहिए जो आसानी से मसीही जीवन पर लागू होती हैं। अब, जब तक हम अत्यधिक चुननेवाले बने रहते हैं और हम केवल व्यापक विषयों जैसे परमेश्वर के गुणों, या परमेश्वर की आज्ञाओं, जैसे "तुम चोरी न करना" या "तुम हत्या न करना" के बारे में बात करते हैं, तो ऐसा लगता है जैसे हम परिचित क्षेत्र में हैं। परंतु जब हम पुराने नियम का और ध्यान से अध्ययन करते हैं तो कुछ घटित होता है। जब हम अधिक विवरण में जाते हैं, तो हम पाते हैं कि पुराने नियम के कई हिस्से ऐसे दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं जिनसे हम परिचित नहीं हैं। वास्तव में, जितना अधिक हम इसे पढ़ते हैं, उतना अधिक ऐसा महसूस होता है कि जैसे हम एक प्राचीन, सुदूर संसार की खोज कर रहे हैं।

हम पुराने नियम की हमसे दूरी को दो तरीकों से देखेंगे। सबसे पहले, हम इस दूरी के कारणों पर बात करेंगे — पवित्रशास्त्र का यह भाग हमें अक्सर इतना अनजाना क्यों लगता है? और दूसरा, हम दूरी के उन प्रकारों का पता लगाएँगे जिनका हम सामना करते हैं। पुराने नियम में किस प्रकार के दृष्टिकोण इसे उससे बहुत अलग प्रतीत होता बनाते हैं जिसे हम आधुनिक मसीहियों के रूप में मानते हैं? आइए पहले हमारे और पुराने नियम के बीच की दूरी के कुछ मुख्य कारणों या कारकों को देखें।

## कारण

कम से कम दो बातें अक्सर हमें पुराने नियम से दूर होने का एहसास कराती हैं। एक ओर, परमेश्वर ने जैविक प्रेरणा नामक प्रक्रिया के द्वारा मनुष्यजाति को यह पवित्रशास्त्र दिया। तथा दूसरी ओर, परमेश्वर ने पुराने नियम की रचना इसलिए की कि वह ईश्वरीय समायोजन नामक प्रक्रिया के द्वारा इसके उद्देश्य को पूरा करे। पुराने नियम की ये विशेषताएँ बाइबल के इस भाग का अध्ययन करते समय हमारे सामने आनेवाली कई चुनौतियों को स्पष्ट करती हैं। आइए पहले जैविक प्रेरणा की प्रक्रिया पर विचार करें।

### जैविक प्रेरणा

पवित्रशास्त्र की ईश्वरीय प्रेरणा के ऐतिहासिक सुसमाचारिक दृष्टिकोण का वर्णन "जैविक प्रेरणा" के रूप में करना आम बात है। जब हम पुष्टि करते हैं कि पवित्र आत्मा ने पवित्रशास्त्र को प्रेरित किया, तो हम इस शब्द का प्रयोग यह दर्शाने के लिए करते हैं कि उसकी प्रेरणा मानवीय लेखकों के व्यक्तित्व, अनुभवों और अभिप्रायों से अलग नहीं थी। कहने का अर्थ यह है कि पवित्र आत्मा की विशेष, त्रुटिरहित निगरानी के तहत मानवीय लेखकों ने स्वयं निर्धारित किया कि उन्हें क्या लिखना है। बाइबल "यांत्रिक" प्रेरणा से नहीं आई, जैसे कि मानो परमेश्वर ने मानवीय लेखकों को निष्क्रिय माध्यमों के रूप में इस्तेमाल किया हो। न ही बाइबल काल्पनिक रूप से प्रेरित थी, जैसे कि मानो परमेश्वर ने केवल बाइबल के लेखकों को लिखने के लिए प्रोत्साहित किया हो, जैसे कि हम संगीतकारों या कलाकारों द्वारा प्रेरणा "मिलने" के बारे में बात करते हैं। इसके विपरीत, परमेश्वर ने सतर्कता से पवित्रशास्त्र की विषय सूची को नियंत्रित किया ताकि यह त्रुटिरहित हो और वास्तव में परमेश्वर का वचन कहला सके। परंतु उसने मानवीय लेखकों के अपने व्यक्तित्वों, अनुभवों और उद्देश्यों को भी काम में लगाया ताकि हम पवित्रशास्त्र को सही रीति से पवित्र लोगों के वचनों के रूप में कह सकें।

देखें पतरस ने 2 पतरस 3:15 और 16 में पौलुस की पत्रियों के बारे में क्या कहा। वहाँ हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :



चलचित्र, अध्याय मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ - Thirdmill at thirdmill.org.

> और हमारे प्रभु के धीरज को उद्धार समझो, जैसा हमारे प्रिय भाई पौलुस ने भी उस ज्ञान के अनुसार जो उसे मिला, तुम्हें लिखा है। वैसे ही उसने अपनी सब पत्रियों में भी इन बातों की चर्चा की है, जिनमें कुछ बातें ऐसी हैं जिनका समझना कठिन है, और अनपढ़ और चंचल लोग उन के अर्थों को भी पवित्रशास्त्र की अन्य बातों की तरह खींच तानकर अपने ही नाश का कारण बनाते हैं। (2 पतरस 3:15-16)

इन पदों में, प्रेरित पतरस ने पुष्टि की कि पौलुस की पत्रियाँ परमेश्वर द्वारा पौलुस को *दिए गए* ज्ञान से लिखी गईं। अन्य शब्दों में, परमेश्वर के आत्मा ने पौलुस की पत्रियों को प्रेरित किया जिससे वे केवल मानवीय लेख नहीं, बल्कि परमेश्वर के लेख बनें। फिर भी, पतरस यह पुष्टि भी करता है कि इन पत्रियों के द्वारा पौलुस का व्यक्तित्व दिखाई देता है। ध्यान दें कि वह क्या लिखता है : “पौलुस ने भी उस ज्ञान के अनुसार जो उसे मिला, तुम्हें लिखा है।।” पवित्रशास्त्र के ये भाग तब भी पौलुस के ही पत्र थे। अत: हम देख सकते हैं कि पतरस के दृष्टिकोण से प्रेरित पौलुस की पत्रियाँ एक प्रक्रिया का परिणाम हैं जिसमें परमेश्वर और उसके मानवीय लेखक दोनों शामिल थे।

यही दृष्टिकोण पुराने नियम पर भी लागू होता है। यही कारण है कि पुराने नियम की व्यवस्था को न केवल परमेश्वर की व्यवस्था, बल्कि मूसा की व्यवस्था भी कहा जाता है। यह परमेश्वर और मूसा की ओर से आई। यही कारण है कि कई भजनों को दाऊद के भजन कहा जाता है। प्रेरणा का जैविक दृष्टिकोण यह भी बताता है कि बाइबल के लेखकों ने यशायाह, यिर्मयाह और दानिय्येल जैसे मानवीय लेखकों की बात क्यों की। यद्यपि परमेश्वर पुराने नियम का संपूर्ण लेखक था, फिर भी उसने पवित्र भविष्यवक्ताओं को नियुक्त किया कि वे इस आधार पर इन पुस्तकों को लिखें कि वे कौन थे, और वे कहाँ और किस समय में रहते थे।

जब आप इसके बारे में सोचते हैं, तो यह देखना कठिन नहीं है कि क्यों बाइबल की जैविक प्रेरणा हमें पुराने नियम से दूर करती है। पुराने नियम के सब लेखक प्राचीन लोग थे। वे प्राचीन मध्य पूर्व के क्षेत्र में रहते थे और, कई रूपों में, उन्होंने उस समय के लोगों की तरह सोचा और लिखा। और इससे भी अधिक, पुराने नियम के लेखकों ने मसीह के आगमन से पहले लिखा था। उनके पास हमारे जैसा नए नियम का पूर्ण विकसित मसीही धर्मविज्ञान नहीं था। परिणामस्वरूप, जब आप और मैं पुराने नियम का अध्ययन करते हैं, तो हम जल्द ही यह देखना शुरू कर देते हैं कि पुराने नियम का संसार हमारे आधुनिक संसार से बहुत अलग था।

> पुराने नियम के यहूदी 600 से अधिक लेवीय नियमों के अनुसार जीवन जीते थे जो उनके जीवन के नैतिक, नागरिक, आत्मिक, हर पहलू को चलाते थे, और पुरुषों और महिलाओं, जानवरों, खेती, भोजन आदि के संबंधों को नियंत्रित करते थे... इसलिए, ये सब विषय हमारी व्याख्या और समझ के लिए महत्वपूर्ण हैं और साथ ही 21वीं सदी के संसार को पहली सदी या ईसा पूर्व में न रखने के लिए भी।
>
> — डॉ. थैडियस जे. जेम्स, जूनियर

बाइबल के लेखकों की जैविक प्रेरणा से उत्पन्न चुनौतियों के अलावा, हमें यह पहचानना चाहिए कि पुराने नियम से हमारी दूरी के एहसास का एक अन्य कारण ईश्वरीय समायोजन है।

## ईश्वरीय समायोजन

मोटे तौर पर, "समायोजन" एक ऐसा शब्द है जिसका प्रयोग धर्मविज्ञानी इस तथ्य का वर्णन करने के लिए करते हैं कि हर बार जब परमेश्वर स्वयं को मनुष्यजाति के सामने प्रकट करता है, तो वह हमसे सीमित मानवीय शब्दों में बात करता है। क्योंकि परमेश्वर उत्कृष्ट और समझ से परे है, इसलिए जब भी वह स्वयं को प्रकट करता है, तो वह इन रूपों में अपने स्तर को हम तक लेकर आता है कि सीमित मनुष्य

समझ सकें। अन्यथा, हम उसे बिल्कुल भी समझ नहीं पाएँगे। आपको याद होगा कि यशायाह 55:8-9 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> **मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं हैं, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है। क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है। (यशायाह 55:8-9)**

परमेश्वर के विचार और तरीके इतने बड़े हैं — वे हमारी सीमाओं से बहुत अधिक हैं — कि उसके द्वारा दिए गए हर प्रकाशन को मानवीय क्षमताओं के अनुरूप बनाया गया है। उसने ऐसा इसलिए किया ताकि हममें से कम से कम कुछ लोग उसके द्वारा प्रकट की गई बातों को समझ सकें और उनका अनुसरण कर सकें।

अब, यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि पुराने नियम में परमेश्वर ने स्वयं को व्यापक, सामान्य भाव में केवल मनुष्यजाति की सीमा तक ही समायोजित नहीं किया। बल्कि, उसने स्वयं को प्राचीन मध्य पूर्व में रहनेवाले इस्राएल की विशिष्ट ऐतिहासिक स्थितियों में भी समायोजित किया। सबसे पहले, उसने पुराने नियम के पवित्रशास्त्र की रचना ऐसे की कि प्राचीन इस्राएली उसे समझ सकें।

क्योंकि पुराने नियम के प्राथमिक पाठक प्राचीन यहूदी थे, इसलिए परमेश्वर ने पुराने नियम को इब्रानी और अरामी भाषा में लिखवाया। परमेश्वर ने दस आज्ञाएँ पत्थरों पर दीं क्योंकि राजकीय नियमों सहित महत्वपूर्ण राष्ट्रीय प्रलेखों को इस रीति प्रदर्शित करना एक अंतरराष्ट्रीय रीति थी। और, कई विषयों में पुराने नियम का विवरण, काव्य, बुद्धि साहित्य और व्यवस्था की साहित्यिक शैलियों ने ऐसी कई साहित्यिक परंपराओं का पालन किया जो प्राचीन मध्य पूर्व में प्रचलित थीं। इन और कई अन्य तरीकों से, परमेश्वर ने पुराने नियम को अपने प्राचीन लोगों के लिए समायोजित किया ताकि वे इसे समझ सकें।

इस कारण से, जब आप और मैं आधुनिक लोगों के रूप में पुराने नियम का अध्ययन करते हैं, तो हम लगातार इस तथ्य का सामना करते हैं कि यह उन लोगों के लिए समायोजित किया गया था जो *बहुत* पहले रहते थे। सबसे पहले, इसे विशेष रूप से इस्राएल के प्राचीन लोगों को संबोधित करने के लिए लिखा गया था।

> **बाइबल की प्रत्येक पुस्तक को मूल पाठकों के लिए लिखा गया था, और हम यहाँ 21वीं सदी में मूल पाठक नहीं हैं। मुझे लगता है कि यह जानना दिलचस्प और शायद हमारे लिए सहायक हो सकता है कि नए नियम की अधिकांश पुस्तकें पत्रियाँ या पत्र हैं, इसलिए जब हम उन पत्रियों को पढ़ते हैं — और मेरे विचार से आप यह बात पूरी बाइबल के लिए कह सकते हैं... तो हम दूसरे लोगों को लिखे पत्र पढ़ रहे हैं। वे हमारे लिए हैं क्योंकि हम कलीसिया से संबंधित हैं, परंतु उन्हें सबसे पहले मूल पाठकों के लिए लिखा गया था।**
>
> **— डॉ. रोबर्ट मैकइवन**

अब जब हमने पुराने नियम और हमारे बीच की दूरी के कुछ कारणों को देख लिया है, तो हमें अपने दूसरे विषय की ओर मुड़ना चाहिए : दूरी के वे प्रकार जिन्हें हम अक्सर अपने और पुराने नियम के बीच पाते हैं। पुराने नियम में हम कैसी बातों का सामना करते हैं जो हमें अनजानी लगती हैं?

## प्रकार

यह मान लेना अच्छा है कि आधुनिक लोगों के रूप में पुराना नियम अक्सर हमें अपने से दूर लगता है। परंतु यह वास्तविकता भ्रम भी पैदा कर सकती है, और यह हमें बाइबल के इस भाग का अध्ययन करने से निरुत्साहित भी कर सकती है। निरुत्साहित होने से बचने का एक सहायक तरीका पुराने नियम में उन बातों को पहचानना है जो हमें ऐसा महसूस कराती हैं। जब हम जान लेते हैं कि हम कैसी दूरी का अक्सर सामना करते हैं, तो हम इन वचनों को समझने और अपने जीवन में लागू करने के लिए बेहतर ढंग से तैयार होंगे।

हमारे और पुराने नियम के बीच की मुख्य प्रकार की दूरी को सामने लाने के कई तरीके हैं, परंतु हमारे उद्देश्यों के लिए हम केवल तीन तरीकों के बारे में बात करेंगे : पहला, धर्मवैज्ञानिक दूरी; दूसरा, सांस्कृतिक दूरी; और तीसरा, व्यक्तिगत दूरी। ये तीनों प्रकार की दूरियाँ कई प्रकार से आपस में जुड़ी हुई हैं। परंतु चर्चा के लिए हम एक-एक करके उनके बारे में बात करेंगे, हम धर्मवैज्ञानिक दूरी के साथ शुरू करेंगे जो पुराने नियम का अध्ययन करते समय हमारे सामने आती है।

### धर्मवैज्ञानिक

जब हम धर्मवैज्ञानिक दूरी के बारे में बात करते हैं, तो हम मुख्य रूप से पुराने नियम के लेखकों द्वारा प्राप्त प्रकाशन और मसीह में हमें प्राप्त पूर्ण प्रकाशन के बीच के अंतर के बारे में बात कर रहे हैं। प्रत्येक मसीही को ऐसा लगता है कि पुराना नियम ऐसे धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करता है जो पहली दृष्टि में नए नियम की शिक्षाओं से मेल नहीं खाते। कुछ उदाहरणों पर विचार करें।

उत्पत्ति 22 में परमेश्वर ने अब्राहम को अपने पुत्र को बलि चढ़ाने के लिए बुलाया, और ऐसा करने की उसकी इच्छा के लिए परमेश्वर ने उसे आशीष दी। परंतु आज हम उस व्यक्ति के बारे में क्या सोचेंगे जो मानता है कि परमेश्वर ने उसे अपने पुत्र को बलि चढ़ाने के लिए बुलाया है? हम ऐसे धर्मवैज्ञानिक दावे को गंभीरता से लेने के बारे में सोचेंगे भी नहीं।

मूसा के समय में, परमेश्वर ने अपने विश्वासयोग्य लोगों से अपेक्षा की कि वे एक बड़ी सेना के रूप में मिस्र से प्रतिज्ञा के देश की ओर कूच करें। परंतु हमें यह निश्चित रूप से अजीब लगेगा यदि हम मसीहियों के एक समूह को प्रतिज्ञा के देश तक पहुँचने के लिए सीनै के जंगल से निकलते हुए देखें।

पुराने नियम में हम ऐसे लोगों के बारे में पढ़ते हैं जो अपने बाल न काटते हुए नाज़ीर बनने की प्रतिज्ञा करने के द्वारा स्वयं को परमेश्वर की सेवा में समर्पित करते हैं। या हम देखते हैं कि परमेश्वर ने यरूशलेम में मंदिर को ऐसे एकमात्र स्थान के रूप में नियुक्त किया जहाँ उसके लोगों को आराधना करनी थी। हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने अपने लोगों से मांग की कि वे पापों के प्रायश्चित के रूप में जानवरों का बलिदान करें, और उसने स्त्रियों और बच्चों सहित कनानी नगरों को बड़े पैमाने पर नष्ट करने का आदेश दिया।

क्या हम सब थोड़ा हैरान नहीं हैं कि पुराना नियम हमें यह मानने के लिए प्रेरित करता है कि परमेश्वर ने ऐसी बातें प्रकट कीं जो नए नियम में उसके द्वारा प्रकट की गई बातों से बहुत अलग प्रतीत होती हैं? इस प्रकार के धर्मवैज्ञानिक मतभेदों की सूची बहुत बड़ी है। हम और कुछ भी कहें, हमारे और पुराने नियम के बीच निश्चित रूप से एक बड़ी धर्मवैज्ञानिक दूरी है।

> जब परमेश्वर स्वयं को हमारे सामने प्रकट करता है, तो वह दूरी और समय में ऐसा करता है... आप पुरानी वाचा की रीति के बारे में सोचें, जहाँ कुछ खान-पान के नियमों और कुछ शुद्ध/अशुद्ध रीतियों का पालन किया जाता था। इसका पालन पुराने नियम के इस्राएलियों द्वारा किया जाना था, परंतु वाचा के द्वारा आए परिवर्तनों को देखते हुए आज हमें उनका पालन करने की आवश्यकता नहीं है। इस तरह के कार्य कोई चाहे तो कर सकता है, परंतु यह जरूरी नहीं है। यह वाचा



चलचित्र, अध्याय मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ - Thirdmill at thirdmill.org.

> की दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं है। वास्तव में, आपको बहुत सावधान रहना होगा जब आप लोगों से इन्हें इसलिए करने को कहते हैं क्योंकि पुराना नियम इन बातों की आज्ञा देता है, तो आप इस जाल में पड़ सकते हैं... "जहाँ हमें परमेश्वर के साथ सही संबंध बनाने के लिए पुरानी वाचा के अधीन आना जरूरी है जिसे अब पूरा किया जा चुका है।" इसलिए वाचा के कारण आए परिवर्तनों के कारण उनमें से कुछ रीतियों का पालन करना आवश्यक नहीं हैं।
>
> — डॉ. स्टीफन जे. वेलम

धर्मवैज्ञानिक दूरी के अलावा, एक अन्य प्रकार की दूरी जो हमें पुराने नियम से अलग करती है वह प्राचीन मध्य पूर्व और हमारे आधुनिक संसार के बीच की सांस्कृतिक दूरी है।

## सांस्कृतिक

हमारे और पुराने नियम के बीच सांस्कृतिक दूरी पाई जाती है क्योंकि मानवीय संस्कृतियाँ लगातार बदल रही हैं। सामाजिक संरचनाएँ बदल जाती हैं। पुराने रीति-रिवाज़ अजीब और पुराने प्रतीत होते हैं। अपने ही देश में मात्र 200 वर्ष पहले जाने की कल्पना करें। कई अंतर हमें ऐसा महसूस कराएँगे जैसे कि हम एक अलग संसार में हों, भले ही हम थोड़े ही अलग युग में रहते हों। अब, यदि ऐसा एक ही स्थान पर 200 वर्ष पहले के लिए है, तो हमें अपने और पुराने नियम की बातों के बीच कितने अधिक सांस्कृतिक अंतर की अपेक्षा करनी चाहिए? प्राचीन मध्य पूर्व और हमारे आधुनिक संसार के बीच इतनी अधिक भिन्नताएँ हैं कि पुराने नियम में हम जिन बातों को पढ़ते हैं उनमें से बहुत सी हमें अत्यधिक अनजानी लगती हैं।

जब पुराना नियम प्राचीन संसार के विभिन्न स्थानों में जीवन का वर्णन करता है, चाहे वह इस्राएल, कनान, मिस्र, अश्शूर, बेबीलोन, फारस या पुराने नियम में पाई जानेवाली कई अन्य संस्कृतियाँ हों, तो हम सांस्कृतिक दूरी को महसूस करते हैं। जिन चरित्रों से हमारा आमना-सामना होता है उनमें अनगिनत सांस्कृतिक मान्यताएँ, मूल्य और रीतियाँ थीं, जैसे कि आज हमारी हैं। परंतु वे अक्सर हमारी आधुनिक सांस्कृतिक मान्यताओं, मूल्यों और रीतियों से बहुत अलग थीं। पुराने नियम में दिखाई देनेवाली मानवीय संस्कृति के कुछ उदाहरणों पर विचार करें :

पुराने नियम का अधिकांश भाग कृषि प्रधान संसार का वर्णन करता है। हम संपूर्ण पवित्रशास्त्र में खेती और पशुपालन के बारे में पढ़ते हैं, परंतु कई आधुनिक शहरी लोग कल्पना ही नहीं कर सकते कि यह प्राचीन जीवनशैली कैसी थी। पुराने नियम के दिनों में तकनीकें भी बहुत भिन्न थीं। आज हममें से कई लोग बातचीत करने, और कार्य करने के लिए जिन तकनीकों पर निर्भर हैं, वे प्राचीन काल में थीं ही नहीं।

पुराने नियम में हम व्यवस्थित विवाहों के बारे में पढ़ते हैं। हम यह भी देखते हैं कि बाइबल के महत्वपूर्ण चरित्रों ने बहुविवाह किया था। पुराने नियम में दासत्व के विभिन्न रूप दिखाई देते हैं। और इस्राएल के भीतर और इस्राएल के बाहर, साम्राज्यवाद की राजनीतिक वास्तविकताओं का संस्कृतियों पर गहरा प्रभाव पड़ा। निस्संदेह, नियम के कुछ अपवाद थे, विशेषकर रेगिस्तानी गोत्रों के बीच, परंतु महान राजा या सम्राट और उनकी शक्तिशाली सेनाएँ पवित्रशास्त्र के इन भागों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। पुराने नियम के चरित्र आधुनिक लोकतांत्रिक आदर्शों के बारे में व्यावहारिक रूप से कुछ भी नहीं जानते थे।

जब हम पुराने नियम के जीवन की इन और इसी तरह की विशेषताओं को देखते हैं, तो हम अक्सर व्याकुल हो जाते हैं कि इन्हें कैसे संभालना है। हमें बाइबल के साथ क्या करना है जो उन संस्कृतियों में इतनी गहराई से जुड़ी है जो हमारी संस्कृति से बहुत अलग हैं? सांस्कृतिक भिन्नताएँ हमें अपने और पुराने नियम के बीच एक बड़े अंतर का एहसास कराती हैं।

> उदाहरण के लिए, मेरे विचार से यदि आप पीछे मुड़कर पुराने नियम को देखें, तो आप पाएँगे कि वहाँ ऐसी बातें हैं जो हमारे आज के समय से बहुत अलग हैं। एक बात तो यह है कि पुराना नियम अपने परिदृश्य और अपनी रीतियों में कृषि प्रधान था... दूसरा, उदाहरण के लिए, बहुविवाह की रीति बहुत प्रचलित थी... और इसलिए यह सांस्कृतिक रूप से हमसे बहुत दूर है।
>
> — डॉ. लुईस ओर्टेज़ा

इस बात पर विचार करने के बाद कि पुराने नियम में धर्मविज्ञान और संस्कृति अक्सर हमें कैसे अजीब लगते हैं, हमें तीसरे प्रकार की दूरी पर ध्यान देना चाहिए — जिसे हम "व्यक्तिगत" दूरी कह सकते हैं।

## व्यक्तिगत

जब हम "व्यक्तिगत" दूरी की बात करते हैं, तो हम इस बात को दर्शाते हैं कि पुराने नियम के दिनों में रहनेवाले लोग आधुनिक लोगों से अलग थे। हमारे और उनके बीच की कई अंतरों में अक्सर बहुत ही व्यक्तिगत, मानवीय कारण शामिल होते हैं। निस्संदेह, पुराने नियम के लोग हमसे पूरी तरह से अलग नहीं थे। जैसा कि हम इस अध्याय में आगे देखेंगे, वे कई महत्वपूर्ण रूपों में हमारे समान थे। परंतु साथ ही, उनके पास बहुत ही अलग-अलग व्यक्तिगत अनुभव थे जिन्होंने उन्हें आज हम जो हैं उससे बहुत अलग बना दिया।

हमें इस बात से चकित नहीं होना चाहिए कि पुराने नियम के समय के लोग हमारे आज के समय के लोगों से अलग थे। आखिरकार, उनके कई स्वभाव और गतिविधियाँ उस धर्मवैज्ञानिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से विकसित हुईं जिसमें वे रहते थे। इसके बारे में इस प्रकार सोचें : धर्मवैज्ञानिक स्तर पर, पुराने नियम में कई व्यक्तियों के पास आज के किसी भी अनुभव के विपरीत महत्वपूर्ण आत्मिक अनुभव थे। उन्हें स्वर्ग के दर्शन हुए और उन्होंने परमेश्वर की सुनी जा सकनेवाली वाणी सुनी। उन्होंने स्वर्गीय प्राणियों के साथ बातचीत की। एक पल के लिए रुकें और अपने आप से पूछें, यदि आपके पास इस प्रकार के आत्मिक अनुभव हों तो आप कैसे अलग होंगे? यदि आपने ईश्वरीय रूप से प्रेरित दर्शनों, वाणियों, स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं आदि का अनुभव किया हो तो आप कैसे व्यक्ति होंगे? निस्संदेह, ऐसे अनुभव हमें नाटकीय रूप से बदल देंगे। इस सत्य को समझने से हमें यह पहचानने में सहायता मिलती है कि हम कई महत्वपूर्ण रूपों में पुराने नियम के लोगों से अलग हैं।

इससे भी अधिक, इस बात पर विचार करें कि सांस्कृतिक प्रभावों के कारण हम पुराने नियम के लोगों से कैसे अलग हैं। पुराने नियम में, लोग अक्सर ऐसी सांस्कृतिक भूमिकाएँ निभाते थे जो हमारे लिए अनजानी हैं। वे राजा, रानी, सेवक और दास थे। पुरुष और स्त्रियाँ अपनी भूमिकाओं को आज की तुलना में बहुत अलग तरीके से देखते थे। पुराने नियम के लोगों के व्यक्तित्वों पर प्राचीन युद्धों की भयावहता का गहरा प्रभाव पड़ा था। आधुनिक तकनीक की सहायता के बिना अकाल और सूखे के अनुभवों ने प्राचीन लोगों के शारीरिक और भावनात्मक स्वास्थ्य पर प्रभाव डाला। आज हममें से कई लोगों ने कभी इस प्रकार की परिस्थितियों का सामना नहीं किया है। और परिणामस्वरूप, हमें अक्सर पुराने नियम में दर्शाए गए लोगों के साथ पहचान करने में कठिनाई होती है।

अब जब हमने उन कारणों और दूरी के प्रकारों को देख लिया है जो पुराने नियम को हमसे अलग करते हैं, तो हमें अपने दूसरे विषय की ओर मुड़ना चाहिए : आधुनिक लोगों के लिए पुराने नियम की प्रासंगिकता। यदि पुराना नियम बहुत पहले लिखा गया था, तो हमें ऐसी कोई आशा क्यों रखनी चाहिए कि यह आज भी हमारे लिए प्रासंगिक है?



चलचित्र, अध्याय मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ - Thirdmill at thirdmill.org.

# प्रासंगिकता

इसके अनगिनत कारण हैं कि क्यों मसीहियों को यह अपेक्षा करनी चाहिए कि पुराना नियम उनके जीवन के लिए महत्वपूर्ण है। परंतु शायद सबसे महत्वपूर्ण प्रमाण यीशु और उसके पहली सदी के प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं से मिलता है। इन लोगों ने बड़े साहस के साथ सिखाया कि पुराना नियम केवल प्राचीन इस्राएल के लिए ही परमेश्वर का आधिकारिक वचन नहीं था, बल्कि यह उनके समय के मसीहियों के लिए भी परमेश्वर का वचन है। आज कई मसीही मानते हैं कि नया नियम इसलिए दिया गया कि पुराने नियम को रद्द कर दिया जाए। परंतु वास्तव में यीशु और उसके प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं ने इसके ठीक विपरीत कहा। उन्होंने सिखाया कि पुराना नियम हर युग में रहनेवाले विश्वासयोग्य मसीहियों के लिए महत्वपूर्ण है।

नया नियम कई स्थानों पर यह सिखाता है कि पुराना नियम हमारे जीवन के लिए प्रासंगिक है, परंतु हम केवल दो दिशाओं में देखेंगे। पहली, हम यीशु की कुछ शिक्षाओं को देखेंगे, और दूसरी, हम प्रेरित पौलुस की कुछ शिक्षाओं पर विचार करेंगे। आइए पहले पुराने नियम की प्रासंगिकता के संबंध में यीशु की शिक्षाओं के बारे में सोचें।

## यीशु की शिक्षाएँ

यह समझने के लिए कि यीशु ने अपने अनुयायियों के लिए पुराने नियम की प्रासंगिकता और अधिकार के बारे में क्या सिखाया, हम उसकी शिक्षा के दो पहलुओं को संक्षेप में देखेंगे। हम कुछ ऐसे अनुच्छेदों से शुरु करेंगे जो अक्सर यीशु द्वारा पुराने नियम के बारे में की गई नकारात्मक टिप्पणियाँ प्रतीत होती हैं। और फिर, हम पुराने नियम की प्रासंगिकता के बारे में उसकी स्पष्ट सकारात्मक पुष्टि को देखेंगे। आइए यीशु की कुछ ऐसी टिप्पणियों से शुरु करें जिन्हें कई व्याख्याकारों ने पुराने नियम पर उसके नकारात्मक दृष्टिकोण के रूप में लिया है।

### नकारात्मक टिप्पणियाँ

हममें से अधिकांश लोग मत्ती 5-7 में यीशु के पहाड़ी उपदेश से परिचित हैं। इस उपदेश में एक बिंदु पर, यीशु ने कई नैतिक विषयों पर बात की। इन विषयों पर उसके दृष्टिकोण से कई अच्छे विश्वासी यह मानने लगे हैं कि यीशु ने पुराने नियम की शिक्षाओं का या तो विरोध किया या उन्हें सुधारा। इन परिचित अनुच्छेदों को सुनें। मत्ती 5:21 और 22 में हम हत्या के बारे में इन वचनों को पढ़ते हैं :

> तुम सुन चुके हो, कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था कि "हत्या न करना" और "जो कोई हत्या करेगा वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा।" परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा, वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा। (मत्ती 5: 21-22)

मत्ती 5:27 और 28 में यीशु ने व्यभिचार के बारे में इस प्रकार कहा :

> तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, "व्यभिचार न करना।" परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका। (मत्ती 5:27-28)

मत्ती 5:31 और 32 में उसने तलाक के बारे में कहा :

> यह भी कहा गया था, "जो कोई अपनी पत्नी को तलाक देना चाहे, तो उसे त्यागपत्र दे।" परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ कि जो कोई अपनी पत्नी को

> व्यभिचार के सिवा किसी और कारण से तलाक दे, तो वह उससे व्यभिचार करवाता है; और जो कोई उस त्यागी हुई से विवाह करे, वह व्यभिचार करता है। (मत्ती 5:31-32)

मत्ती 5:33 और 34 में हम फिर से इसी प्रारूप को देखते हैं जब यीशु शपथ के बारे में बात करता है :

> फिर तुम सुन चुके हो कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था, "झूठी शपथ न खाना, परन्तु प्रभु के लिए अपनी शपथ को पूरी करना।" परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ कि कभी शपथ न खाना। (मत्ती 5:33-34)

यीशु ने मत्ती 5:38 और 39 में बदला लेने के बारे में भी बात की :

> तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, "आँख के बदले आँख, और दाँत के बदले दाँत।" परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ कि बुरे का सामना न करना; परन्तु जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा भी फेर दे। (मत्ती 5:38-39)

और अंत में, मसीह ने मत्ती 5:43 और 44 में शत्रुओं से प्रेम करने के बारे में इस प्रकार कहा :

> तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, "अपने पड़ोसी से प्रेम रखना, और अपने बैरी से बैर।" परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूँ कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिए प्रार्थना करो। (मत्ती 5:43-44)

मसीह के सारे अनुयायियों को सहमत होना चाहिए कि यीशु परमेश्वर का सर्वोच्च प्रकाशन है और उसकी शिक्षाएँ पुराने नियम की शिक्षाओं से कहीं अधिक पूर्ण हैं। उसने सीधे हृदय से बात की और वह ऐसे आयामों तक पहुँचा जहाँ तक पुराना नियम कभी नहीं पहुँचा। परंतु दुखद रूप से, कई मसीही मानने लगे हैं कि हत्या, व्यभिचार, तलाक, शपथ, बदला और शत्रुओं के प्रति प्रेम पर यीशु का दृष्टिकोण वास्तव में पुराने नियम का खंडन करता है।

कई विश्वासी गलत रीति से मानते हैं कि यीशु ने अपने स्वयं के और अधिक व्यापक निर्देशों के सामने पुराने नियम की शिक्षाओं को अस्वीकार कर दिया। अब, यदि यह लोकप्रिय दृष्टिकोण सत्य के आस-पास भी है, तो हमारे पास यह सोचने का अच्छा कारण है कि यीशु हमें पुराने नियम के नैतिक अधिकार से दूर करने के लिए आया था। परंतु मत्ती 5 में यीशु ने वास्तव में क्या कहा, जब हम इस पर गहराई से विचार करते हैं, तो हम पाते हैं कि यह दृष्टिकोण पर्याप्त नहीं है। यीशु ने किसी भी तरह से पुराने नियम के *किसी भी भाग* का खंडन नहीं किया। बल्कि, उसने इसके अधिकार की पुष्टि की और उन गलतफहमियों का खंडन किया जो उसके समय में पुराने नियम के बारे में पाई जाती थीं।

पुराने नियम से असहमत होने के बजाय, यीशु ने उन तरीकों पर आपत्ति जताई जिनमें उसके समय के कई शास्त्रियों और फरीसियों ने पुराने नियम की व्याख्या की थी। यीशु के समय में कुछ ही लोगों के पास बाइबल थी। इस कारण, इस्राएल के आम लोग अपने धार्मिक नेताओं के मौखिक निर्देशों पर बहुत अधिक निर्भर थे। परंतु पुराने नियम से सिखाने के बजाय, शास्त्री और फरीसी अक्सर उन परंपराओं के आधार पर अपने निर्देश देते थे जो उन्होंने पुराने नियम में जोड़ दी थीं। दुःख की बात है कि ये परंपराएँ बाहरी आज्ञाकारिता पर ध्यान केंद्रित करती हैं, न कि हृदय की स्थिति पर — और यह यीशु की और साथ ही पुराने नियम की शिक्षाओं का एक मुख्य विषय था।

सामान्य शब्दों में, यीशु ने अपनी शिक्षाओं — जो पुराने नियम के अनुरूप थीं — की तुलना उन दृष्टिकोणों से की जो "कहा" और "सुना" गया था। दूसरे शब्दों में, वह मौखिक परंपराओं को संबोधित कर रहा था। जब यीशु और नए नियम के अन्य लोगों ने पुराने नियम का उल्लेख किया, तो उन्होंने हमेशा "लिखे



चलचित्र, अध्याय मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ - Thirdmill at thirdmill.org.

हुए" या "कहे गए" के बारे में बात की। और नए नियम में कहीं भी यीशु उस तरीके से प्रस्तुत की गई किसी भी बात का खंडन नहीं करता। अतः, पहाड़ी उपदेश में यीशु पुराने नियम में लिखी गई बातों से असहमत नहीं था, बल्कि इस्राएल के अन्य शिक्षकों द्वारा स्थापित मौखिक परंपराओं से असहमत था। इस प्रकाश में, हमें और अधिक बारीकी से देखना चाहिए कि यीशु ने इन मौखिक व्याख्याओं के बारे में वास्तव में क्या कहा था।

> जब यीशु पहाड़ी उपदेश में इस वाक्यांश का प्रयोग करते हुए बात करता है, "तुम सुन चुके हो... परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ" तो वह यह नहीं कह रहा था कि पुराने नियम की व्यवस्था को अब रद्द किया जा रहा है। वास्तव में, वह इसके बिल्कुल विपरीत स्पष्ट रूप से यह कहता है, कि "मैं व्यवस्था को पूरा करने आया हूँ।" परंतु यीशु एक प्रसिद्ध रब्बीवादी तकनीक का उपयोग कर रहा है जिसका उपयोग व्यवस्था के शिक्षक अपने स्वयं के शिक्षण संबंधी अधिकार के बारे में बात करने के लिए करते थे। "तुमने परंपरा में विभिन्न लोगों को व्यवस्था की शिक्षाओं के बारे में ये बातें कहते सुना है, परंतु मैं तुमसे यह कहता हूँ..." और यह एक वर्तमान अधिकार के साथ-साथ, अतिरिक्त अधिकार के साथ आता है। और इस प्रकार, यीशु इस प्रसिद्ध शिक्षण तकनीक के साथ अपने शिक्षण संबंधी अधिकार की स्थापना कर रहा है, पुराने नियम की व्यवस्था को हटाने के लिए नहीं, बल्कि धर्मवैज्ञानिक और मसीह-आधारित रूप से बहुत महत्वपूर्ण कुछ कहने के लिए — कि मेरे और व्यवस्था की मेरी शिक्षा के संबंध में पुराने नियम की व्यवस्था की व्याख्या करना महत्वपूर्ण है।
>
> — डॉ. ग्रेगोरी आर. पेरी

आइए उन विरोधाभासों के बारे में फिर से सोचें जो यीशु ने दर्शाए थे। हत्या के विषय के संबंध में, कई लोगों का मानना है कि यीशु ने हत्या न करने की आज्ञा में घृणा को भी शामिल किया। परंतु यह समझना महत्वपूर्ण है कि पुराने नियम में न केवल हत्या की निंदा की गई है; बल्कि इसमें परमेश्वर के लोगों के बीच कलह की भी निंदा की गई है।

परमेश्वर के लोगों के बीच सद्भाव और शांति का आदर्श भजन 133:1 में अच्छी तरह से व्यक्त किया गया है जो कहता है, "यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें!" यीशु के समय की लोकप्रिय परंपराएँ यहूदियों के बीच घृणा और कलह को तब तक माफ करती थीं जब तक कि वे शारीरिक हत्या की ओर न ले जाएँ। इसके विपरीत, यीशु ने हत्या न करने की आज्ञा को घृणा न रखने की आज्ञा के साथ जोड़कर पुराने नियम के वास्तविक मानकों को फिर से स्थापित किया।

व्यभिचार के संबंध में, बहुत से लोगों की गलतफ़हमी कि यीशु ने शारीरिक व्यभिचार न करने की पुराने नियम की आज्ञा से आगे बढ़कर हृदय के व्यभिचार को भी इसमें शामिल कर दिया। परंतु निर्गमन 20:17 में दसवीं आज्ञा कहती है, “तू किसी... की स्त्री का लालच न करना, और न किसी के दास–दासी या बैल–गदहे का, न किसी की किसी वस्तु का लालच करना।” यहाँ पुराने नियम में स्पष्ट रूप से किसी के जीवनसाथी का लालच न करने की आज्ञा दी गई है — दूसरे शब्दों में, यह हृदय का व्यभिचार है। यीशु का तर्क पुराने नियम की व्यवस्था का खंडन नहीं, बल्कि उसे फिर से स्थापित करना था।

तलाक के संबंध में, यीशु के समय में इस्राएल में कई धार्मिक अगुवों का मानना था कि एक पुरुष व्यावहारिक रूप से किसी भी कारण से अपनी पत्नी को तलाक दे सकता है। उन्होंने सिखाया कि पुराने नियम की व्यवस्था उन्हें यह अधिकार देती है, यदि वे उचित कानूनी प्रमाण-पत्र जारी कर देते हैं। परंतु पुराना नियम स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि परमेश्वर ने ऐसे व्यवहार की अनुमति नहीं दी थी। जैसा कि हम मलाकी 2:16 में पढ़ते हैं, “इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, ‘मैं स्त्री–त्याग से घृणा करता हूँ।’”



चलचित्र, अध्याय मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ - Thirdmill at thirdmill.org.

मत्ती 19:3-9 में यीशु ने तलाक के विषय पर अपनी स्थिति को अधिक विस्तार से समझाया। वहाँ उसने स्पष्ट किया कि तलाक का उसका विरोध पुराने नियम पर ही आधारित था, विशेषकर आदम और हव्वा से जुड़ी सृष्टि की कहानी पर।

शपथ लेने की रीति के संबंध में, यीशु के समय में कुछ रब्बियों ने सिखाया था कि तब तक झूठ बोला जा सकता है जब तक कोई अपनी बात को पूरा करने के लिए शपथ नहीं लेता। यीशु इस शिक्षा से असहमत था और उसने इस बात पर बल दिया कि पुराना नियम किसी भी तरह का झूठ बोलने से रोकता है, न कि केवल शपथ का उल्लंघन करनेवाले झूठ से। उदाहरण के लिए, नीतिवचन 6:16-17 ऐसे शुरू होता है, "छ: वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है, वरन् सात हैं जिन से उसको घृणा है : अर्थात् घमण्ड से चढ़ी हुई आँखें, झूठ बोलनेवाली जीभ..."

इसी कारण मत्ती 5:37 में यीशु ने कहा : "तुम्हारी बात 'हाँ' की 'हाँ,' या 'नहीं' की 'नहीं' हो।" यीशु पुराने नियम से असहमत नहीं था, परंतु उसने दिखाया कि शास्त्रियों और फरीसियों की मौखिक परंपराएँ पुराने नियम के मानकों से कम थीं।

बदला लेने के संबंध में, निर्गमन 21:24 में "आँख के बदले आँख" के बारे में पुराने नियम के मूल नियम को यीशु के समय में व्यक्तिगत बदले के लिए परमेश्वर की स्वीकृति के रूप में लिया जाता था। यह माना जाता था कि जब भी कोई आपके साथ कुछ गलत करता है, तो आपके पास भी अधिकार है कि आप भी उसका उतना ही नुकसान कर दो। परंतु मूल रूप से, "आँख के बदले आँख" न्यायियों के लिए मूसा के नियमों का भाग था। इसे इस्राएल के आधिकारिक न्यायालयों में न्यायियों का मार्गदर्शन करने के लिए रचा गया था। जैसा कि हमारे समय में होता है, न्यायाधीशों को अपने निर्णय और दंड निष्पक्ष रूप से तथा किए गए अपराधों के अनुसार सुनाने होते थे।

मूसा का अभिप्राय इस मानक को पारस्परिक विषयों पर लागू करने का नहीं था। इसके बजाय, पुराने नियम ने सिखाया कि सामान्य दैनिक जीवन में दया और कृपा का व्यवहार किया जाना चाहिए। जैसा कि लैव्यव्यवस्था 19:18 कहता है, "पलटा न लेना, और न अपने जाति भाइयों से बैर रखना... मैं यहोवा हूँ।" यीशु उस नियम की गलत व्याख्या से असहमत था जिनका पालन न्यायियों को उनके न्यायालयों में करना था, और उसने पुराने नियम की उस शिक्षा की पुष्टि की कि हमें पारस्परिक संबंधों में दया दिखानी है।

अंततः, शत्रुओं के प्रति प्रेम के संबंध में, यीशु के समय में कुछ शिक्षकों ने सिखाया कि अपने शत्रुओं से घृणा करना स्वीकार्य है। उन्होंने स्पष्ट रूप से लैव्यव्यवस्था 19:18 की आज्ञा "एक दूसरे से अपने ही समान प्रेम रखना" से यह निष्कर्ष निकाला कि अपने शत्रुओं से घृणा करना बिल्कुल उचित है। परंतु पुराना नियम हमें अपने शत्रुओं से प्रेम करने के लिए प्रोत्साहित करता है। उदाहरण के लिए, निर्गमन 23:4 में हम पढ़ते हैं, "यदि तेरे शत्रु का बैल या गदहा भटकता हुआ तुझे मिले, तो उसे उसके पास अवश्य फेर ले आना।"

अतः जैसा कि हमने अभी देखा, यीशु ने अपने विचारों को पुराने नियम के विचारों के विरोध में नहीं रखा। इसके विपरीत, उसने अपने समय की गलत *व्याख्या* का विरोध किया और पुराने नियम की सच्ची शिक्षाओं पर बल दिया।

> जब यीशु पहाड़ी उपदेश में ये कथन "तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, परंतु मैं तुम से यह कहता हूँ" प्रस्तुत करता है, तो मेरे विचार से इसे देखने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि यीशु व्यवस्था के सही अर्थ तक पहुँच रहा है। ऐसा नहीं है कि वह कुछ नया प्रस्तुत कर रहा है, बल्कि यह कि वह एक तरह से यह प्रकट कर रहा है कि हमेशा से परमेश्वर का लक्ष्य क्या रहा है। इसलिए जब व्यवस्था कहती है, "तू व्यभिचार न करना," तो परमेश्वर ने कभी नहीं चाहा कि उसके लोग यह सोचें कि वे उन स्त्रियों को गंदी दृष्टि से देखकर बच सकते हैं जो उनकी पत्नियाँ नहीं हैं, या यहाँ तक कि अपनी पत्नियों को भी गंदी दृष्टि से देखकर बच



चलचित्र, अध्याय मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ - Thirdmill at thirdmill.org.

> सकते हैं। अतः यीशु कोई नई मांग नहीं रख रहा है, वह उसे स्पष्ट कर रहा है जो व्यवस्था में पहले से ही निहित है।
>
> — डॉ. जेम्स एम. हैमिल्टन

अब जब हमने यीशु की ऐसी कुछ शिक्षाओं को देख लिया है, जिन्हें कई लोग गलत तरीके से पुराने नियम के बारे में यीशु की नकारात्मक टिप्पणियाँ मानते हैं, तो हमें ऐसे कई अनुच्छेदों की ओर मुड़ना चाहिए जिनमें यीशु ने उसका अनुसरण करनेवाले सब लोगों के लिए पुराने नियम के अधिकार और प्रासंगिकता के सकारात्मक कथन कहे हैं।

## सकारात्मक कथन

सुसमाचारों में ऐसे बहुत से अनुच्छेद हैं जो पुराने नियम के वचनों के पूर्ण अधिकार और प्रासंगिकता पर मसीह के सकारात्मक दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से प्रकट करते हैं। उसने अक्सर पुराने नियम को अपनी शिक्षाओं के आधार के रूप में दर्शाया। और हमें रूपांतरण के पहाड़ के उस दृश्य को नहीं भूलना चाहिए जहाँ यीशु व्यवस्था देनेवाले मूसा और भविष्यद्वक्ता एलिय्याह के बीच खड़ा था। चारों सुसमाचार यीशु की सिद्ध धार्मिकता, अर्थात् व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं के प्रति उसके पूर्ण समर्पण पर बल देते हैं। यीशु ने पुराने नियम की शिक्षा के प्रति समर्पित जीवन जिया। वह उसे पूरा करने के लिए आया और उसने अपने चेलों को भी ऐसा ही करने के लिए कहा।

सुनिए मत्ती 5:17-18 में यीशु ने क्या कहा :

> यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूँ, लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूँ। क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएँ, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा (मत्ती 5:17-18)।

यहाँ यीशु ने *बल* दिया कि वह "व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं" — पहली सदी में पूरे पुराने नियम को ऐसे ही दर्शाया जाता था — का लोप करने नहीं आया है। वास्तव में, हम पद 17 के आरंभ का अनुवाद केवल "यह न समझो" के रूप में ही नहीं बल्कि, "यह समझने की कोशिश भी मत करो..." के रूप में भी कर सकते हैं, इसलिए जब यीशु ने कहा कि व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु भी “बिना पूरा हुए” नहीं टलेगा, तो उसने पुराने नियम के वचनों की पूरी तरह से पुष्टि की। दुखद रूप से, कई मसीही इन पदों को पढ़कर सोचते हैं कि यीशु का अर्थ कुछ ऐसा था, "मैं पुराने नियम का लोप करने तो नहीं पर इसे अप्रासंगिक बनाने आया हूँ।" परंतु ऐसा नहीं था। आगे मत्ती 5:19 में यीशु द्वारा कहे गए शब्दों को सुनें :

> जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगों को सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में सबसे छोटा कहलाएगा; परन्तु जो कोई उन आज्ञाओं का पालन करेगा और उन्हें सिखाएगा, वही स्वर्ग के राज्य में महान् कहलाएगा (मत्ती 5:19)।

ध्यान दें कि यीशु ने इस अनुच्छेद में क्या कहा। यदि लोग छोटी-छोटी आज्ञाओं का पालन करने में विफल रहते हैं, या यदि वे दूसरों को भी उनकी उपेक्षा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, तो वे "स्वर्ग के राज्य में सबसे छोटे" होंगे। और जो कोई छोटी से छोटी आज्ञा का भी पालन करता है, और दूसरों को उनका पालन करना सिखाता है, तो वह "स्वर्ग के राज्य में महान" होगा।

यीशु अपने समय में यहूदियों के बारे में कुछ जानता था जो आज के विश्वासियों पर भी लागू होता है। हम सब पुराने नियम को अपने जीवन में लागू करने में बहुत चयनात्मक होते हैं। हम उन भागों पर

ध्यान देते हैं जो हमें पसंद हैं और जो भाग हमें पसंद नहीं हैं उन्हें हम छोड़ देते हैं, या अस्वीकार भी कर देते हैं। परंतु यीशु ने इस बात पर बल दिया कि उसके चेलों को इसके कुछ भागों की ही नहीं, बल्कि संपूर्ण पुराने नियम के हर विवरण की पुष्टि करनी चाहिए और उसका पालन करना चाहिए। सुनिए मत्ती 5:20 में उसने इसे किस रीति से कहा है :

> मैं तुम से कहता हूँ, कि यदि तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर न हो, तो तुम स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश करने न पाओगे (मत्ती 5:20)।

मसीह के अनुयायियों को इस पाखंड से बचना चाहिए कि वे पुराने नियम को परमेश्वर का वचन मानने का दावा तो करते हों, परंतु उसका पालन नहीं करते।

> पुराने नियम के संबंध में, लूका 24 में स्वयं जी उठा यीशु इम्माऊस के मार्ग पर चेलों को पुराने नियम से शिक्षा देता है, और वह उन्हें संपूर्ण पवित्रशास्त्र से स्वयं उसके बारे में लिखी बातों को दर्शाता है। अब, इसका अर्थ यह होना चाहिए कि यीशु ने पुराने नियम को महत्वपूर्ण माना जो उसकी ओर संकेत करता है। और यह लगभग ऐसा है जैसा कि वह कह रहा हो, "देखो, तुम्हें पुनरुत्थान मिल सकता है, मेरा पुनरुत्थान, और यह अद्‌भुत है, परंतु ऐसा मत सोचो कि क्योंकि अब मैं तुम्हें मिल गया हूँ, इसलिए तुम्हें वचन की आवश्यकता नहीं है, तुम्हें पृष्ठभूमि की पुस्तक की आवश्यकता नहीं है।" इसके विपरीत, तुम्हें तो मुझे समझने और संसार के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को समझने के लिए इसकी और भी अधिक आवश्यकता है। अतः, हम यीशु को तब और कई अन्य उदाहरणों में पुराने नियम की पुष्टि करते हुए देखते हैं। मेरे कहने का अर्थ है कि जब उसकी परीक्षा की गई, तो वह बस यही दोहराता रहा, "यह लिखा है... यह लिखा है... यह लिखा है..." स्वामी हमें यह दिखा रहा है कि यदि वह पवित्रशास्त्र के प्रति समर्पित हुआ, तो उसके अनुयायियों के रूप में हमें कितना अधिक समर्पित होना चाहिए।
>
> — डॉ. पीटर वॉकर

अब जब हमने देख लिया है कि कैसे यीशु की शिक्षाओं ने आज हमारे लिए पुराने नियम की प्रासंगिकता की पुष्टि की है, तो हमें नए नियम के दूसरे भाग, अर्थात् प्रेरित पौलुस की शिक्षाओं की ओर संक्षेप में मुड़ना चाहिए।

## पौलुस की शिक्षाएँ

कुल मिलाकर, सुसमाचारिक मसीही नए नियम में पौलुस की पत्रियों पर बहुत अधिक निर्भर हैं। परंतु हम मसीही जीवन के लिए पुराने नियम की प्रासंगिकता के प्रति पौलुस के व्यवहार को गलत समझते हैं। बहुत बार कुछ गंभीर मसीही भी तर्क देते हैं कि पौलुस ने मसीह के अनुयायियों को पुराने नियम के अधिकार से मुक्त कर दिया है। परंतु जैसा कि कई व्याख्याकारों ने बताया है, इन विषयों में पौलुस और यीशु के बीच पूर्ण सामंजस्य था। यीशु की तरह, पौलुस ने उन रीतियों का विरोध किया, जिनमें उसके समय के कई लोग पुराने नियम के वचन की गलत व्याख्या करते थे, परंतु उसने मसीही जीवन के लिए पुराने नियम के निर्विवाद अधिकार और प्रासंगिकता पर बल दिया।

हम पौलुस की शिक्षाओं का अध्ययन भी वैसे ही करेंगे जैसे हमने इन विषयों पर यीशु के दृष्टिकोण को देखा था। सबसे पहले, हम उस अनुच्छेद को देखेंगे जहाँ पौलुस ने पुराने नियम के बारे में नकारात्मक टिप्पणियाँ की हैं। दूसरा, हम मसीह के अनुयायियों के लिए पुराने नियम की प्रासंगिकता के बारे में उसके

कुछ सकारात्मक कथनों पर विचार करेंगे। आइए पहले यह देखें कि कैसे पौलुस ने पुराने नियम के बारे में नकारात्मक टिप्पणियाँ कीं।

## नकारात्मक टिप्पणियाँ

गलातियों 3:1-5 के इन जाने-माने शब्दों को सुनें।

> हे निर्बुद्धि गलातियो! किसने तुम्हें मोह लिया है? तुम्हारी तो मानो आँखों के सामने यीशु मसीह क्रूस पर दिखाया गया! मैं तुम से केवल यह जानना चाहता हूँ कि तुम ने आत्मा को, क्या व्यवस्था के कामों से या विश्वास के समाचार से पाया? क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि हो कि आत्मा की रीति पर आरम्भ करके अब शरीर की रीति पर अन्त करोगे? क्या तुम ने इतना दुःख व्यर्थ ही उठाया? परन्तु कदाचित् व्यर्थ नहीं जो तुम्हें आत्मा दान करता और तुम में सामर्थ्य के काम करता है, वह क्या व्यवस्था के कामों से या सुसमाचार पर विश्वास से ऐसा करता है? (गलातियों 3:1-5)

ध्यान दें कि इस अनुच्छेद में प्रेरित ने "व्यवस्था के कामों" और "विश्वास" के बीच तुलना की। कई लोगों का मानना है कि यह विरोधाभास पुराने नियम की नैतिक शिक्षाओं को नए नियम या मसीही जीवन शैली के नैतिक निर्देशों के विरोध में रखता है।

पौलुस के लेखन में इन और इसी तरह के कथनों ने कई लोगों को यह सोचने के लिए मजबूर किया है कि पौलुस ने मसीही धर्म की मौलिक रूप से भिन्न शिक्षाओं का पक्ष लेते हुए पुराने नियम की प्रासंगिकता को निरस्त कर दिया है। वास्तव में, कई मसीही यह तर्क देते हैं कि पुराने नियम को आधिकारिक मार्गदर्शन देनेवाले के रूप में देखने का अर्थ सुसमाचार से दूर जाना है। फिर भी, हमें गलातियों की पूरी पत्री, और साथ ही पौलुस की पत्रियों के अन्य भागों को भी अधिक ध्यान से देखना होगा। वहाँ, हम पाते हैं कि यीशु की तरह पौलुस भी पुराने नियम का विरोधी नहीं था। वह इसके दुरुपयोग का विरोधी था। पौलुस योग्यता-आधारित, विधिपूर्ण धर्म की निर्देशिका के रूप में पुराने नियम के दुरुपयोग के विरुद्ध दृढ़ता से खड़ा था। गलातियों 3:10-13 में सुनिए कि पौलुस ने बाद में गलातिया की कलीसियाओं को कैसे संबोधित किया :

> इसलिये जितने लोग व्यवस्था के कामों पर भरोसा रखते हैं, वे सब शाप के अधीन हैं, क्योंकि लिखा है, “जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई सब बातों के करने में स्थिर नहीं रहता, वह शापित है।” पर यह बात प्रगट है कि व्यवस्था के द्वारा परमेश्वर के यहाँ कोई धर्मी नहीं ठहरता, क्योंकि धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा। पर व्यवस्था का विश्वास से कोई सम्बन्ध नहीं; क्योंकि “जो उनको मानेगा, वह उनके कारण जीवित रहेगा।” मसीह ने जो हमारे लिये शापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के शाप से छुड़ाया, क्योंकि लिखा है, “जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह शापित है।” (गलातियों 3:10-13)

जैसा कि यह अनुच्छेद दर्शाता है, पौलुस ने उन झूठे शिक्षकों का विरोध किया जो अपने लाभ के लिए व्यवस्था की आज्ञाकारिता पर भरोसा करते थे। जब हमारा झुकाव इस ओर होता है, तो हम शापित होते हैं क्योंकि हम कभी परमेश्वर की व्यवस्था का पूरी तरह से पालन नहीं कर सकते। व्यवस्था के शाप से बचने का एकमात्र तरीका मसीह पर विश्वास करना है जिसने परमेश्वर के शाप को अपने ऊपर ले लिया।

पौलुस ने कभी पुराने नियम का विरोध नहीं किया। उसने पुराने नियम की शिक्षा को मसीहियों के लिए कभी अप्रासंगिक नहीं माना। बल्कि, उसने उन झूठे शिक्षकों का विरोध किया जो यह दावा करते थे कि उद्धार मसीह पर विश्वास करने की अपेक्षा व्यवस्था का पालन करने पर निर्भर करता है। वास्तव में,



चलचित्र, अध्याय मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ - Thirdmill at thirdmill.org.

गलातियों को लिखी अपनी पत्री में, पौलुस ने अपने नए नियम के सिद्धांत को प्रमाणित करने के लिए पुराने नियम का रुख किया कि परमेश्वर के समक्ष धार्मिकता केवल विश्वास के द्वारा मिलती है। गलातियों 3:11 में पौलुस के शब्दों को फिर से सुनें जहाँ उसने हबक्कूक 2:4 को उद्धृत किया :

> धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा। (गलातियों 3:11)

लगभग इसी तरह, पौलुस ने रोमियों 4:1-12 में अब्राहम के जीवन का प्रयोग करते हुए पुराने नियम के इस सिद्धांत को दर्शाया। उसके दृष्टिकोण से, केवल विश्वास के द्वारा धार्मिकता की नए नियम की शिक्षा वास्तव में पुराने नियम की शिक्षा में निहित थी।

> पौलुस... अन्यजातियों के लिए एक प्रेरित था, परंतु वह अपने देशवासियों, अर्थात् अपने यहूदी लोगों से भी प्रेम करता था। वह चाहता था कि वे देखें, वह चाहता था कि वे प्रभु यीशु मसीह के साथ एक जीवित संबंध रखें, वह उन्हें यह दिखाने की कोशिश कर रहा था कि वास्तव में उनकी विरासत, जो कि पुराना नियम है, सिखाता है कि लोग वास्तव में केवल विश्वास से ही उद्धार पाते हैं, और उसे उदाहरण के लिए अब्राहम जैसे विश्वास के प्रमुख कुलपिता मिले, यहाँ तक कि हमारे महान पिता अब्राहम ने भी विश्वास के द्वारा उद्धार पाया था। यह पौलुस के लिए एक महत्वपूर्ण कार्य था, अर्थात् अपने देशवासियों को यह विश्वास दिलाना कि जो संदेश वह सिखा रहा है, वह वास्तव में पुराने नियम में निहित है और यह कि यीशु पुराने नियम की पूर्णता है। अतः उसके लिए यह महत्वपूर्ण था कि वह वास्तव में केवल विश्वास के द्वारा उद्धार के संदेश को दर्शाने के लिए पुराने नियम का प्रयोग करे।
>
> — डॉ. वुयानी सिंदो

पौलुस को मूसा की व्यवस्था सहित पुराने नियम से प्रेम था। रोमियों 7:12 में उसने लिखा कि व्यवस्था "पवित्र, ठीक, और अच्छी है।" परंतु जब हम उद्धार को अर्जित करने के तरीके के रूप में परमेश्वर की व्यवस्था का दुरुपयोग करते हैं, तो हम इसे उसमें बदल देते हैं जिसका उद्देश्य वह कभी नहीं था। पूरे पुराने नियम में, लोगों को भविष्य में आने वाले मसीहा के विषय में परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास करने के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह से परमेश्वर के दंड से बचाया गया था। परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करना उस अनुग्रह के प्रति उनके धन्यवाद का प्रत्युत्तर होना था जिसके द्वारा वे बचाए गए थे। आज भी हमें इस अंतर को स्वीकार करने की जरूरत है। पुराने नियम के नैतिक निर्देश मसीहियों के लिए प्रासंगिक हैं, उद्धार अर्जित करने के तरीके के रूप में नहीं, बल्कि मसीह में हमें मुफ़्त में मिले उद्धार के कारण हमारे धन्यवाद को प्रकट करने के तरीके के रूप में।

यह देख लेने के बाद कि पौलुस की शिक्षाओं में पुराने नियम के बारे में नकारात्मक टिप्पणियाँ वास्तव में कार्य पर आधारित धार्मिकता की एक प्रणाली के रूप में पुराने नियम के दुरुपयोग के बारे में थीं, अब हमें मसीह के अनुयायियों के लिए पुराने नियम के अधिकार और प्रासंगिकता के बारे में प्रेरित के मजबूत, सकारात्मक कथनों को देखना चाहिए।

## सकारात्मक कथन

> पौलुस यहूदी था। वह हमेशा से यहूदी था। उनकी पृष्ठभूमि यहूदी थी... वह अपने यहूदी होने के बारे में बात करता है। वह पवित्रशास्त्र के प्रति समर्पित था। फिलिप्पियों में वह कहता है कि एक फरीसी के रूप में वह इसके प्रति समर्पित था। जब वह गलातियों में अपनी पृष्ठभूमि की कहानी सुनाता है तो वह कहता है

> कि उसमें अपने पूर्वजों को जानने का जोश उसके साथियों से कहीं अधिक था। और वह वहाँ यहूदी धर्म के बारे में बात कर रहा है। वह स्वयं को पुराने नियम की शिक्षाओं, अर्थात् इब्रानी बाइबल की शिक्षाओं के प्रति समर्पित करने की बात कर रहा है। और यह उसकी यहूदी पृष्ठभूमि है जो यीशु कौन है के बारे में उसकी शिक्षा में आती है जब वह अन्यजातियों के पास जाता है। जब वह अन्यजातियों के पास जाता है, तो वह चाहता है कि वे समझें कि यीशु का आगमन यहूदी मसीहा का आगमन था, कि अन्यजातियों के पास सुसमाचार का आना अब्राहम से की गई प्रतिज्ञाओं की पूर्णता था... वह पवित्रशास्त्र को अस्वीकार नहीं करता है, परंतु वह अब उसे नए सिरे से समझता है। वह समझता है कि यीशु इब्रानी बाइबल में बताई गई हर बात की पूर्णता है।
>
> — डॉ. मार्क ए. जेनिंग्स

विचार करें कि रोमियों 15:4 में पौलुस ने पुराने नियम के विषय में क्या लिखा :

> जितनी बातें पहले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिए लिखी गई हैं कि हम धीरज और पवित्रशास्त्र के प्रोत्साहन द्वारा आशा रखें। (रोमियों 15:4)

जब पौलुस ने यहाँ "पहले से लिखी गईं" बातों और "पवित्रशास्त्र" के बारे में बात की, तो उसके मन में पुराना नियम था। इस अनुच्छेद के अनुसार, हमारी मसीही आशा को विकसित करने और बनाए रखने के लिए पुराना नियम आवश्यक है। पुराने नियम की कहानियाँ, व्यवस्था, भजन, भविष्यवाणियाँ, "हमारी ही शिक्षा के लिए" हैं।

परंतु बिना किसी संदेह के, पौलुस ने 2 तीमुथियुस 3:16-17 में पुराने नियम की प्रासंगिकता का सबसे मजबूत और स्पष्ट कथन कहा है। यहाँ उसने यह लिखा :

> संपूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए। (2 तीमुथियुस 3:16-17)

अधिकाँश मसीही इस पद से परिचित हैं, परंतु हम अक्सर कल्पना करते हैं कि “संपूर्ण पवित्रशास्त्र” शब्द नए नियम को दर्शाता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इन शब्दों का नए नियम के हमारे दृष्टिकोण पर प्रभाव पड़ता है। परंतु जब पौलुस ने तीमुथियुस को "संपूर्ण पवित्रशास्त्र" के बारे में लिखा, तो उसके मन में विशेष रूप से पुराना नियम था। उन अद्भुत बातों को सुनें जो पुराना नियम हमें देने में सक्षम है — यह सिखाने, समझाने, सुधारने और धार्मिकता की शिक्षा देने, और हमें हर भले काम के लिए तैयार करने में सक्षम है। संक्षेप में, पौलुस ने कहा कि पुराना नियम मसीही जीवन के लिए अत्यावश्यक है।

> इसलिए, जब पौलुस कहता है, "संपूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है," तो वह पुराने नियम के बारे में बात कर रहा है। वह पुराने नियम की प्रासंगिकता के बारे में बात कर रहा है। और वह कहता है कि यह न केवल प्रासंगिक है, बल्कि यह पूरी तरह से प्रासंगिक है... पुराने नियम के बिना हमारे पास नए नियम में इस्तेमाल किए जानेवाले विभिन्न शब्दों को समझने के लिए कोई संदर्भ नहीं है। उदाहरण के लिए, परमेश्वर — यह परमेश्वर कौन है? या मसीह —

> मसीह क्या है? या पाप, उद्धार, और यहाँ तक कि सुसमाचार जैसी अवधारणाएँ। ये सारे शब्द पुराने नियम में प्रस्तुत और विकसित किए गए हैं, और केवल पुराने नियम में उनके इस्तेमाल को समझकर ही हम नए नियम को ध्यानपूर्वक और ज़िम्मेदारी से पढ़ सकते हैं।
>
> — डॉ. मैथ्यू न्यूकिर्क

हम देख चुके हैं कि हमें पुराने नियम का अध्ययन उसकी दूरी की चुनौती और उसकी प्रासंगिकता की अपेक्षा के कारण करना चाहिए। आइए अब हम इस अध्याय में अपने तीसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ें : पुराने नियम को आज हमारे जीवन में लागू करने का कार्य।

## वर्तमान प्रयोग

यह कहना एक बात है, जो कि हमें कहनी चाहिए, कि पुराना नियम आज मसीहियों के लिए प्रासंगिक है, परंतु इस सत्य को व्यवहार में लाना बिल्कुल अलग बात है। कभी-कभी यह देखना कठिन नहीं होता कि पुराना नियम हम पर कैसे लागू होता है, परंतु कई बार हमारे और पुराने नियम के बीच की दूरी के कारण यह बहुत कठिन होता है। अब, यह राहत देनेवाली बात है कि पवित्र आत्मा मसीह के अनुयायियों की पुराने नियम का अध्ययन करने और उसे लागू करने में मदद करता है। वह हमें ऐसे रूपों में सिखाता है जो हमारी अपनी सामर्थ्य से सीखी जानेवाली बातों से कहीं बेहतर हैं। परंतु यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम पुराने नियम का जितना हो सके गहराई से अध्ययन करें ताकि हम इसे आज अपने जीवन में सही रीति से लागू कर सकें।

प्रेरित पौलुस ने तीमुथियुस को इस ज़िम्मेदारी के बारे में बताया। 2 तीमुथियुस 2:15 में पौलुस ने कहा :

> अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो। (2 तीमुथियुस 2:15)

जैसा कि पौलुस ने यहाँ कहा है, ग्रहणयोग्य होने के लिए, हमें पुराने नियम को एक "काम करनेवाले" — यूनानी भाषा में इसे एर्गाटेस (ἐργάτης) — के रूप में पढ़ना चाहिए, जिसका अर्थ है एक कार्यकर्त्ता जो परमेश्वर के वचन को सही रीति से काम में लाता हो।

हम पुराने नियम के आधुनिक प्रयोग को तीन चरणों में देखेंगे। सबसे पहले, हम उन चुनौतियों को पहचानेंगे जिन पर हमें विजय प्राप्त करनी है जब हम पुराने नियम को अपने जीवन में लागू करने का प्रयास करते हैं। दूसरा, हम उन संपर्कों पर विचार करेंगे जो इसे हमारे समय पर लागू करना संभव बनाते हैं। और तीसरा, हम उन विकासों को जाँचेंगे जिन्हें हमें स्वीकार करना है जब हम इसे लागू करते हैं। आइए उन चुनौतियों से शुरु करें जिनका सामना हम आज पुराने नियम को अपने जीवन में लागू करते समय करते हैं।

### चुनौतियाँ

जैसा कि हमने इस अध्याय में पहले देखा, परमेश्वर ने सबसे पहले पुराना नियम अपने लोगों को दिया जो बहुत पहले रहते थे ताकि वे अपने समय में इसके अनुसार जीवन जी सकें। परंतु जैसा कि हमने



चलचित्र, अध्याय मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ - Thirdmill at thirdmill.org.

यह भी देखा है, उसने ये वचन *हमें* भी दिए ताकि हम भी *अपने* समय में उनके अनुसार जी सकें। परंतु हम एक ऐसे संसार में रहते हैं जो पुराने नियम के संसार से बहुत अलग है। हमारे और पुराने नियम के बीच एक बड़ा अंतराल है जिसे हमें पुराने नियम को लागू करते समय ध्यान में रखना होगा। 1 कुरिन्थियों 10:11 को सुनें जहाँ प्रेरित पौलुस ने पुराने नियम के मसीही प्रयोग की चुनौती का सारांश दिया है। वहाँ उसने यह लिखा :

> **परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ीं, दृष्टान्त की रीति पर थीं; और वे हमारी चेतावनी के लिए जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गई हैं। (1 कुरिन्थियों 10:11)**

इस अनुच्छेद के बड़े संदर्भ से हमें पता चलता है कि पौलुस के मन में मिस्र से इस्राएल के निर्गमन के बारे में पुराने नियम के विवरण थे और कैसे वे कुरिन्थुस के मसीहियों पर लागू हुए। ध्यान दें कि उसने कम से कम तीन बातों पर प्रकाश डाला। सबसे पहले, उसने यह कहते हुए दूर अतीत की घटनाओं के बारे में बात की, "ये सब बातें, जो उन पर पड़ीं... लिखी गई हैं।" दूसरा, पौलुस ने अपना और कुरिन्थुस के अपने साथी मसीहियों का उल्लेख करते हुए कहा कि कहानियाँ "हमारी चेतावनी के लिए... लिखी गई हैं।" और तीसरा, पौलुस ने मसीह के अनुयायियों का वर्णन ऐसे लोगों के रूप में करते हुए "जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं," स्वीकार किया कि पुराने नियम के समय और मसीही युग के बीच बहुत कुछ हुआ था। मसीही इतिहास के युग के अंत में, अर्थात् इतिहास की पूर्णता के समय में रहते हैं। यहाँ प्रेरित के शब्द पुराने नियम के आधुनिक प्रयोग की चुनौती को प्रकट करते हैं।

> **1 कुरिन्थियों 10 में पौलुस जो कहता है मुझे वह पसंद है। इसलिए, 1 कुरिन्थियों 10 में वह इस्राएल के इतिहास और इस सच्चाई पर विचार कर रहा है कि यह इतिहास पुराने नियम के वचनों में लिखा गया है, और वह कुरिन्थियों से कहता है जिनमें से अधिकांश मूर्तिपूजक अन्यजाति के लोग थे, "ये सब बातें, जो उन पर पड़ीं... और वे हमारी चेतावनी के लिए... लिखी गई हैं।" इसलिए, पवित्रशास्त्र लोगों पर अधिकार रखता है, भले ही पहले पहल ऐसा लगे कि यह उनके लिए नहीं था, परंतु परमेश्वर ने उन्हें दृष्टि में रखा था। परमेश्वर पवित्रशास्त्र के लिखे जाने पर संप्रभु है, और अपने मन में वह निश्चय कर सकता है, भले ही यह शुरू में अलग पाठकों के लिए लिखा गया हो, फिर भी वह इसे हमें संबोधित करने का निश्चय कर सकता है।**
>
> — डॉ. स्टीफन ई. विट्मेर

जैसा कि पौलुस के शब्दों से पता चलता है, पुराने नियम को हमारे समय में लागू करने की चुनौतियों का सामना करने के लिए, हमें तीन बातों से निपटना होगा। सबसे पहले, हमें पुराने नियम के प्राचीन संसार को समझना होगा; दूसरा, हमें अपने और उस प्राचीन संसार के बीच के ऐतिहासिक विकास पर विचार करना होगा; और तीसरा, इन विकासों के द्वारा हम जो सीखते हैं उसे हमें अपने संसार में लाना होगा। आइए पहले विचार करें कि पुराने नियम के प्राचीन संसार पर ध्यान देना कितना महत्वपूर्ण है।

## प्राचीन संसार

हमारा प्रमुख कार्य यह है कि हमें जितना हो सके पुराने नियम की व्याख्या उस प्राचीन संसार के आधार पर करनी है जिसके लिए इसे सबसे पहले दिया गया था। परंतु, चाहे हम इस पर कितनी भी मेहनत करें, हम इसे कभी पूरी तरह से नहीं कर पाएँगे। हम जिस संसार में आज रहते हैं उससे इतने गहराई से प्रभावित हैं कि हम हमेशा उन आधुनिक पूर्वाग्रहों के साथ पवित्रशास्त्र के प्राचीन लेखों को देखते हैं

जिनसे हम पूरी तरह से बच नहीं सकते। दुखद रूप से, इस तथ्य को अक्सर आधुनिक लोगों के रूप में हम जो विश्वास करते हैं उसे पुराने नियम में पढ़ने के समर्थन के रूप में लिया जाता है। परंतु ऐसा करना पवित्रशास्त्र को हमारे अधीन कर देता है, न कि हमें पवित्रशास्त्र के अधीन। इसलिए, जबकि हम अपने आधुनिक पूर्वाग्रहों से पूरी तरह से बच नहीं सकते, फिर भी सब विश्वासयोग्य विद्यार्थियों को जितना हो सके उनके मूल अर्थ को समझने के लिए पुराने नियम के अनुच्छेदों का गहराई से अध्ययन करना चाहिए।

सरल शब्दों में कहें तो, पुराने नियम के अनुच्छेद का मूल अर्थ वह प्रभाव है जिसे परमेश्वर और उसके प्रेरणा-प्राप्त लेखकों ने अपने पहले पाठकों पर डालने के लिए लेख को तैयार किया था। एक बहुत ही महत्वपूर्ण अर्थ में, हम परमेश्वर और उसके प्रेरणा-प्राप्त लेखकों को सीधे हमसे बात करते हुए नहीं सुन रहे हैं; हम उन्हें दूसरों से बात करते हुए सुन रहे हैं। इसलिए, जब हम पुराने नियम का अध्ययन करते हैं, तो ऐसे प्रश्न पूछना महत्वपूर्ण है : पहले पाठकों की प्राथमिकताएँ क्या थीं? वे किन बातों को मानते थे? उनकी परिस्थितियाँ क्या थीं? उनके समय में परमेश्वर ने उन्हें अपने प्रति समर्पित होने के लिए कैसे बुलाया था? इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देना हमेशा आसान नहीं होता। परंतु मूल अर्थ का अनुसरण करना सभी आधुनिक प्रयोगों के लिए मार्ग को निर्धारित करता है।

एक बार जब हम पुराने नियम के प्राचीन संसार पर पर्याप्त ध्यान दे देते हैं, तो हमें पुराने नियम के समय और हमारे समय के बीच हुए ऐतिहासिक विकासों को समझने की चुनौती का सामना करना होगा।

## ऐतिहासिक विकास

कुछ अन्य धर्मों की पवित्र पुस्तकों के विपरीत, पुराने नियम की धर्मवैज्ञानिक शिक्षाएँ समय के साथ विकसित हुईं। पुराना नियम उन अनेक तरीकों को दर्शाता है जिनसे परमेश्वर ने प्राचीनकाल से ही अपने, संसार के और लोगों के बारे में सच्चाइयों को प्रकट किया। इसके बाद यह इस्राएल के कुलपतियों के समय में, मूसा के समय में, और इस्राएल के प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने के समय के दौरान परमेश्वर के प्रकाशन के साथ जारी रहता है। परंतु यह यहीं नहीं रुकता। हम इस्राएल के राजतंत्र के युग में, प्रतिज्ञा के देश से इस्राएल के निर्वासन की त्रासदी के दौरान, और अंततः उस संघर्ष के समय में भी परमेश्वर के प्रकाशन को देखते हैं जो कुछ इस्राएलियों के प्रतिज्ञा के देश में लौटने के बाद हुआ। ऐसा नहीं था कि परमेश्वर ने एक बार अपने लोगों के समक्ष कुछ प्रकट किया और फिर कभी उस विषय पर या उस से संबंधित कुछ नहीं कहा। इसके विपरीत, पुराने नियम में ही परमेश्वर अधिकाधिक बातों को प्रकट करता रहा।

इसके अलावा, बाइबल पर आधारित विश्वास में बहुत महत्वपूर्ण विकास नए नियम की शिक्षाओं में भी दिखाई देते हैं। नया नियम पुराने नियम के अधिकार को स्वीकार करता है, परंतु यह नए नियम के समय में आगे के विकास को भी प्रकट करता है। इसलिए, जब भी हम आज अपने जीवन में पुराने नियम के किसी अनुच्छेद को लागू करते हैं, तो हमें इसके मूल अर्थ से आगे बढ़ना चाहिए और प्राचीन पुराने नियम के संसार और हमारे आधुनिक संसार के बीच हुए विविध ऐतिहासिक विकासों पर विचार करना चाहिए।

बाइबल पर आधारित विश्वास सदियों से एक जैसा नहीं रहा, परंतु ऐसा भी नहीं था कि परमेश्वर ने एक धर्म शुरू किया, उसे त्याग दिया और फिर उसकी जगह दूसरा धर्म रख दिया। बाइबल एक बढ़ते हुए धर्म या विश्वास को प्रकट करती है। धर्मविज्ञानी अक्सर बाइबल पर आधारित विश्वास के विकास को जैविक बताते हैं — यह उसी तरह विकसित हुआ जैसे एक बीज से एक पेड़ पूरी परिपक्वता तक बढ़ता है। जब आप इसके बारे में सोचते हैं, तो एक बीज उस परिपक्व पेड़ से बहुत अलग दिखता है जो उससे उगता है। विकास के हर चरण में भिन्नताएँ होती हैं। परंतु यह एक जीव, एक पौधा ही बना रहता है। लगभग इसी तरह, पुराने नियम के बाद के भाग पहले के भागों से अलग हैं। और नया नियम पुराने नियम से अलग है। परंतु ये अंतर जैविक विकास को दर्शाते हैं। हमारा विश्वास बहुत समय पहले बोए गए एक



चलचित्र, अध्याय मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ - Thirdmill at thirdmill.org.

बीज से विकसित हुआ, वह पूरे पुराने नियम में परिपक्व होता रहा और नए नियम में परिपक्वता तक पहुँच गया।

> इसमें प्रगति हुई है कि परमेश्वर स्वयं को कैसे प्रकट करता है। बाइबल इसे दिखाती है, जिसे हम "जैविक विकास" कहते हैं, जहाँ परमेश्वर के बारे में धर्म-सिद्धांत और विषय और विचार बीज से पूर्ण रूप में विकसित होते हैं, और इसलिए बाइबल अपने स्वयं के प्रगतिशील संदेश के बारे में भी बात करती है। और इसलिए, बाइबल और पेन्टाटचूक के भीतर प्रगति का एक रूप है। यदि आप ऐसा करें, यदि आप एक फूल के खिलने की धीमी खींची हुई तस्वीर की कल्पना कर सकते हैं तो आप देखेंगे कि यह परमेश्वर के प्रकाशन के आरंभ से लेकर उसके पूरे तरह से खिलने तक की एक प्रगति है।
>
> — रेव्ह. माईकल जे. ग्लोडो

जैसा कि हम देख सकते हैं, आधुनिक प्रयोग की चुनौतियों का सामना करने के लिए हमें न केवल पुराने नियम के प्राचीन संसार और पवित्रशास्त्र में हुए ऐतिहासिक विकास पर ध्यान देना चाहिए। बल्कि हमें इस सच्चाई के प्रति भी दृढ़ता से समर्पित रहना चाहिए कि परमेश्वर ने पुराने नियम को हमारे संसार को ध्यान में रखकर लिखने के लिए प्रेरित किया।

### हमारा संसार

जैसा कि पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 10:11 में कहा है, पुराना नियम “हमारी चेतावनी के लिये” लिखा गया है।" यह सच्चाई हमसे मांग करती है कि हम आधुनिक संसार में मसीह के अनुयायियों के रूप में अपनी ज़िम्मेदारियों को पहचानें।

यदि हमें आज पुराने नियम को प्रभावी ढंग से लागू करना है, तो हमें हमेशा स्वयं से ये प्रश्न पूछने चाहिए : पुराने नियम के किसी अनुच्छेद का मूल अर्थ हमारे संसार पर कैसे लागू होता है? हम किस प्रकार के लोग हैं और किन परिस्थितियों का सामना करते हैं, इसे यह कैसे संबोधित करता है? हमारी कमजोरियाँ और ताकतें क्या हैं? इस प्रकार के प्रश्न आज पुराने नियम को लागू करने की प्रक्रिया के लिए महत्वपूर्ण हैं।

वर्तमान प्रयोग की चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए, हमें दूसरे निकटता से जुड़े विषय की ओर मुड़ना चाहिए। वे कौन से संपर्क हैं जो हमारे लिए पुराने नियम के अनुच्छेद के प्राचीन, मूल अर्थ को लेने और इसे हमारे समकालीन संसार पर लागू करना संभव बनाते हैं?

## संपर्क

कई रूपों में, पुराने नियम का आधुनिक प्रयोग प्राचीन संसार से एक कलाकृति को चुनने, और इसे हजारों वर्षों आगे ले जाने और फिर आज हमारे संसार के लिए इसकी प्रासंगिकता को प्रकट करने जैसा है। जब आप इसके बारे में सोचते हैं, तो यह बहुत लंबी यात्रा होती है। क्या बात हमें यह सोचने को प्रेरित करती है कि यह संभव है? हम कैसे सफल हो सकते हैं? किसी प्राचीन पुस्तक का किसी आधुनिक व्यक्ति पर प्रभाव पड़े, इसके लिए यह जरूरी है कि उस पुस्तक की विषय-वस्तु और उसके पाठक के बीच कुछ संपर्क हो। यदि उनमें कोई संपर्क नहीं होता, तो हम इसे बिल्कुल भी नहीं समझ पाएँगे, और हम इसे ऐसे ही ठुकरा देंगे। और यह तब भी होता है जब हम पुराने नियम को पढ़ते हैं। हमें हमेशा उन संपर्कों या समानताओं के प्रति सचेत रहना चाहिए जो पुराने नियम के समय और हमारे समय के बीच की दूरी पर पुल बाँधते हैं।

इन संपर्कों को सूचीबद्ध करने के कई तरीके हैं, परंतु तीन समानताओं को प्रकट करना सहायक होता है। हमारे पास वही परमेश्वर है जो प्राचीन इस्राएलियों के पास था जिन्होंने सबसे पहले इस पवित्रशास्त्र को प्राप्त किया था; हम उसी संसार में रहते हैं जहाँ वे रहते थे; और हम उसी प्रकार के लोग हैं। आइए संपर्क की इन बातों को खोलें, हम इस सच्चाई के साथ शुरू करें कि नए नियम के मसीहियों का परमेश्वर वही परमेश्वर है जिसे हम पुराने नियम में पाते हैं।

## वही परमेश्वर

जैसा कि हमने देखा है, हमारे आधुनिक संसार और पुराने नियम के संसार के बीच एक बड़ा अंतराल है। परंतु एक बहुत ही वास्तविक रूप में, कुछ आवश्यक सच्चाइयाँ हैं जो समान बनी हुई हैं, जैसे कि हम कौन हैं, जिस संसार में हम रहते हैं, और जिस परमेश्वर की हम सेवा करते हैं। विश्वासयोग्य मसीही आज उसी परमेश्वर की आराधना और सेवा करते हैं जिसकी सेवा पुराने नियम में विश्वासयोग्य प्राचीन इस्राएलियों ने की थी। यह तथ्य बहुत महत्वपूर्ण संपर्क स्थापित करता है क्योंकि पवित्रशास्त्र सिखाता है कि परमेश्वर अपरिवर्तनीय या न बदलनेवाला है। वह आज भी वही परमेश्वर है जो प्राचीनकाल में था। अब हमें यहाँ सावधान रहना होगा। अपरिवर्तनीयता का अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर *स्थिर* है। इसका अर्थ यह नहीं कि वह इतिहास से विमुख है।

**अनंत युक्ति** पारंपरिक मसीही धर्मविज्ञानियों ने ठीक ही सिखाया है कि तीन मुख्य तरीके हैं जिनमें परमेश्वर वही अपरिवर्तनीय परमेश्वर है। वह अपनी अनंत युक्ति, अपने ईश्वरीय गुणों और अपनी वाचाई प्रतिज्ञाओं में नहीं बदलता है। आइए इनमें से प्रत्येक तरीके को देखें और कि वे कैसे सुनिश्चित करते हैं कि परमेश्वर अब भी वैसा ही है जैसा वह पुराने नियम के समय में था। पहला, परमेश्वर की अनंत युक्ति — ब्रह्मांड के लिए उसकी अनंत योजना — अपरिवर्तनीय है।

> जब भी संसार में कुछ होता है, तो लोग आश्चर्य करते हैं कि क्या यह वह है जो वास्तव में परमेश्वर के मन में था या नहीं? और खासकर जब संसार में गलत चीजें होती हैं तो हम सोचते हैं कि इसमें परमेश्वर कहाँ है और उसका उद्देश्य क्या है? और मेरे विचार से परमेश्वर की संप्रभुता के बाइबल आधारित सिद्धांत की संपूर्णता को समझना हमारे लिए सहायक है क्योंकि यह स्पष्ट है कि ऐसा कुछ भी घटित नहीं होता जो परमेश्वर की परम इच्छा और उसके उद्देश्य से बाहर हो। और पवित्रशास्त्र में ऐसे बहुत से स्थान हैं जिनकी ओर हम संकेत कर सकते हैं। इफिसियों 1 निश्चित रूप से उनमें से एक स्थान है, जो कहता है कि परमेश्वर अपनी इच्छा के उद्देश्य के अनुसार सब कुछ करता है। और इसलिए, इतिहास में जो कुछ भी हुआ है वह अंततः परमेश्वर के उद्देश्यों का हिस्सा है... और परमेश्वर के पास एक उद्देश्य है — और यह हमारी सीमित बुद्धि के लिए एक बड़ा भेद है — जिसे वह मानवीय इतिहास के द्वारा पूरा कर रहा है।
>
> — डॉ. फिलिप रीकन

जैसे कि भविष्यवक्ता यशायाह अपनी पुस्तक यशायाह 46:10 में कहता है :

> मैं [परमेश्वर] तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूँ जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूँ, 'मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूँगा।' यशायाह 46:10

जैसा कि यह अनुच्छेद दर्शाता है, बाइबल सिखाती है कि परमेश्वर ने जो कुछ भी किया है और जो कुछ परमेश्वर कर रहा है वह एक अपरिवर्तनीय, व्यापक प्रारूप का हिस्सा है, जिसे उसके सृष्टि के कार्य से पहले स्थापित किया गया था।

इन अध्यायों में, हम इस अनंत योजना के लक्ष्य और दिशा का कुछ विस्तार से अध्ययन करेंगे, विशेष रूप से अपने राज्य को जैसा वह स्वर्ग में है, पृथ्वी पर लाने की परमेश्वर की योजना का। परंतु इस समय, यह कहना पर्याप्त होगा कि परमेश्वर की अनंत योजना की अपरिवर्तनीयता हमें सिखाती है कि उसके पुराने नियम के उद्देश्य उसके नए नियम के उद्देश्यों के साथ मेल खाते हैं। हम चाहे कैसे भी अंतर देखें, दोनों नियम, पुराना और नया, दो अलग-अलग योजनाओं को प्रस्तुत नहीं करते। कोई भी योजना दूसरी योजना का न तो स्थान लेती है और न उसके विरोध में होती है। इसके विपरीत, पुराना नियम और नया नियम एकीकृत योजना के चरण या कदम हैं जो इतिहास को एक अपरिवर्तनीय लक्ष्य, अर्थात् पृथ्वी को परमेश्वर के राज्य में बदलने के लक्ष्य की ओर ले गई है और हमेशा लेकर जाएगी।

**ईश्वरीय गुण** दूसरा, परमेश्वर अपने ईश्वरीय गुणों — अपने तत्व के गुणों — में भी वही परमेश्वर है।

निश्चित रूप से, जैसे-जैसे परमेश्वर इतिहास में कार्य करता है, वह अलग-अलग समय पर अपने चरित्र के विभिन्न पहलुओं को प्रकट करता है। उदाहरण के लिए, कभी-कभी वह अपनी दया को प्रकट करता है; कभी-कभी वह अपने क्रोध को प्रकट करता है। कभी-कभी वह अपनी महान सामर्थ्य को प्रकट करता है; कभी-कभी वह स्वयं को रोक लेता है। परन्तु उसका अनंत स्वभाव कभी नहीं बदलता। इब्रानियों 1:10-12 में इब्रानियों के लेखक ने मसीह के अनंत स्वभाव के बारे में जैसे बात की है उसे सुनें:

> **हे प्रभु, आदि में तू ने पृथ्वी की नींव डाली, और स्वर्ग तेरे हाथों की कारीगरी है। वे तो नष्ट हो जाएँगे, परन्तु तू बना रहेगा; और वे सब वस्त्र के समान पुराने हो जाएँगे, और तू उन्हें चादर के समान लपेटेगा, और वे वस्त्र के समान बदल जाएँगे: पर तू वही है और तेरे वर्षों का अन्त न होगा। (इब्रानियों 1:10-12)**

और याकूब 1:17 में हम यह पढ़ते हैं :

> **क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है। (याकूब 1:17)**

जैसा कि याकूब ने यहाँ कहा, हमारा परमेश्वर बदलता नहीं है।

दुखद रूप से, कई अच्छे मसीही अक्सर ऐसे बात करते हैं जैसे कि परमेश्वर के पास पुराने नियम में गुणों का एक समूह था और अब नए नियम में गुणों का एक बहुत अलग समूह है। मुझे याद है जब मैं छः साल का था तब मैंने यरीहो में यहोशू के युद्ध पर अपने शिक्षक की टिप्पणी सुनी थी। जब उसने हमें कहानी सुनाना समाप्त कर लिया, तो उसने हम सब की ओर देखा और कहा, "बच्चों, पुराने नियम में परमेश्वर बहुत निर्दयी था। वह उस समय चाहता था कि बच्चे भी मारे जाएँ। परंतु अब परमेश्वर बदल गया है। नए नियम में वह सब से प्रेम करता है। क्या आप खुश नहीं हैं कि आप पुराने नियम के बजाय नए नियम के समय में रहते हैं?" और निस्संदेह, हम सब बहुत खुश थे। हममें से कोई भी यरीहो के बच्चों की तरह मरना नहीं चाहता था।

अब, मेरी अध्यापिका जितनी भी अच्छी रही हो, उन्हें एक बहुत ही बड़ी ग़लतफ़हमी थी। पुराने और नए नियम के बीच परमेश्वर के गुण *नहीं बदले।* इसके विपरीत, वह पुराने नियम और नए नियम में दंड देनेवाला परमेश्वर है। और वह पुराने नियम और नए नियम में प्रेम का परमेश्वर है। परमेश्वर के गुण अनंत हैं। वे हमेशा अपरिवर्तनशील रहे हैं और हमेशा रहेंगे।

परमेश्वर के गुणों की अपरिवर्तनीयता उन संपर्कों को प्रकट करती है जिनकी हमें इतिहास की सब अवधियों के लिए अपेक्षा करनी चाहिए। परमेश्वर के गुण बिल्कुल नहीं बदले हैं। इसलिए, हम आश्वस्त



चलचित्र, अध्याय मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ - Thirdmill at thirdmill.org.

हो सकते हैं कि पुराने नियम के समय में, नए नियम के समय में और हमारे अपने समय में उसके कार्य और प्रकाशन, नियमित रूप से उसके अनंत स्वभाव को दर्शाते हैं। वह आज और हमेशा से वही परमेश्वर है जिसकी हम आज आराधना करते हैं।

**वाचाई प्रतिज्ञाएँ।** तीसरा, परमेश्वर अपनी वाचाई प्रतिज्ञाओं में भी वही परमेश्वर है। बिना असफल हुए, परमेश्वर वह सब कुछ पूरा करेगा जिसकी उसने वाचा में अपने लोगों के साथ करने की शपथ ली है।

अब हमें यहाँ सावधान रहना होगा। पवित्रशास्त्र में कई बार, परमेश्वर लोगों को चेतावनी देता है और कुछ देने की बात कहता है जिन्हें वह पूरा नहीं करता। परंतु चेतावनियाँ और कुछ देने की बातें वाचा की प्रतिज्ञाएँ नहीं हैं। वाचा की प्रतिज्ञाएँ वे बातें हैं जिन्हें करने की परमेश्वर ने शपथ खाई है, और वाचा की ये शपथें अचूक हैं। जैसा कि इब्रानियों 6:17 में लिखा है :

> **इसलिए जब परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के वारिसों पर और भी साफ रीति से प्रकट करना चाहा कि उसका उद्देश्य बदल नहीं सकता, तो शपथ को बीच में लाया। (इब्रानियों 6:17)**

यही कारण है कि परमेश्वर की वाचाएँ इस श्रृंखला में इतनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। संपूर्ण पुराने नियम की शिक्षाएँ और नए नियम की शिक्षाएँ सामंजस्य में हैं क्योंकि परमेश्वर प्रमुख वाचाओं की एक श्रृंखला के द्वारा अपने राज्य के उद्देश्यों को पूरा करता है। प्रत्येक वाचा पिछली वाचाओं के ऊपर बनती है और उनका विस्तार करती है।

सबसे पहले, परमेश्वर ने आदम के समय में एक वाचा बाँधी, जिसमें उसने परमेश्वर के राज्य के लक्ष्य और मनुष्य की भूमिका को स्थापित किया। नूह के दिनों में, परमेश्वर ने प्रकृति की स्थिरता का आश्वासन देते हुए इस वाचा के ऊपर निर्माण किया। अब्राहम के समय में, परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी कि इस्राएल बढ़ोतरी करेगा और परमेश्वर की आशीष को पूरे संसार में फैलाएगा। मूसा के साथ अपनी वाचा में, परमेश्वर ने इस्राएल के गोत्रों के सामने अपनी व्यवस्था को स्थापित किया। दाऊद के समय में, उसने इस्राएल को एक राज्य के रूप में स्थापित किया और इस बात पर बल दिया कि दाऊद का वंशज सिंहासन पर बैठेगा और हमेशा के लिए राज्य करेगा। और अंततः, परमेश्वर ने अतीत की विफलताओं को उलटते हुए और अपने राज्य के उद्देश्यों को पूरा करते हुए मसीह में नई वाचा बाँधी। निस्संदेह, परमेश्वर ने इनमें से प्रत्येक वाचा में अलग-अलग राज्य नीतियों पर बल दिया, जैसा कि उसने अपनी अगम्य बुद्धि में उपयुक्त देखा। परंतु इन वाचाओं में से प्रत्येक में उसने जो भी प्रतिज्ञा की वह पूरी की जाएगी क्योंकि उसकी वाचाई प्रतिज्ञाएँ अपरिवर्तनीय हैं।

हम सब को यह स्वीकार करना होगा कि समय-समय पर ऐसा प्रतीत होता है मानो परमेश्वर अपनी कुछ प्रतिज्ञाएँ भूल गया है या उसने उन्हें अलग रख दिया है। परंतु वास्तविकता यह है कि जब हम पवित्रशास्त्र को ठीक से समझते हैं — यह याद रखते हुए कि परमेश्वर बदला नहीं है — तो हम पाते हैं कि प्रत्येक वाचाई प्रतिज्ञा पूरी हुई है या पूरी होगी। परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को ऐसे तरीके से पूरा कर सकता है जिसकी किसी ने कभी उम्मीद न की हो, परंतु वह उन्हें पूरा अवश्य करेगा। और क्योंकि परमेश्वर पुराने नियम में वही अपरिवर्तनीय परमेश्वर है जो वह आज है, इसलिए उसकी वाचाई प्रतिज्ञाएँ हमें पुराने नियम की प्राचीन शिक्षाओं से जोडती हैं।

हमने देखा है कि पुराना नियम और हमारा आज का विश्वास इस तथ्य से जुड़े हुए हैं कि हमारे पास समान अपरिवर्तनीय परमेश्वर है। अब, हमें पुराने नियम के विश्वास और आज के मसीही विश्वास के बीच दूसरे प्रकार के संपर्क की ओर मुड़ना चाहिए, और वह यह सच्चाई है कि हम उसी संसार में रहते हैं।

## वही संसार

जैसा कि हमने पहले देखा, हमारे लिए अपने समय और पुराने नियम के बीच की भिन्नताओं पर ध्यान केंद्रित करना आसान है। परंतु, यद्यपि प्राचीन इस्राएल के समय से बहुत कुछ बदल गया है, फिर



चलचित्र, अध्याय मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ - Thirdmill at thirdmill.org.

भी हम उसी संसार में रहते हैं। हमें कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि पुराना नियम किसी अन्य संसार के लिए लिखा गया था, एक ऐसा संसार जो मौलिक रूप से हमारे संसार से अलग था। पुराने नियम का संसार वही संसार था जिसमें आप और मैं आज रहते हैं। हम पुराने नियम के विश्वासियों के साथ एक समान इतिहास और समान परिस्थितियों को साझा करते हैं।

**ऐतिहासिक पृष्ठभूमियाँ।** यह सच्चाई कि पुराने नियम के विश्वासी उसी संसार में रहते थे जिसमें हम रहते हैं, हमारे नए नियम के विश्वास और पुराने नियम के विश्वास के बीच कम से कम दो प्रकार के संपर्क स्थापित करती है। सबसे पहले, पुराना नियम ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है जो हमारे कई वर्तमान अनुभवों को स्पष्ट करता है। और दूसरा, पुराना नियम ऐसी समानांतर स्थितियों का वर्णन करता है जो हमारे कई वर्तमान अनुभवों को *प्रतिबिंबित* करती हैं। आइए देखें कि जब हम कहते हैं कि पुराना नियम विश्वास के हमारे अनुभवों को ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है तो हमारा क्या अर्थ है।

पुराने नियम की सबसे स्पष्ट, फिर भी सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक यह है कि यह नए नियम और आज के संसार में घटनाओं और शिक्षाओं की पृष्ठभूमियाँ प्रदान करता है। पुराने नियम की घटनाएँ शून्य में नहीं घटीं। वे काल्पनिक नहीं थीं। वे वास्तविक इतिहास में घटीं, और उनमें से कई ने संसार पर ऐसे निशान छोड़े जो हमेशा बने रहेंगे।

उदाहरण के लिए, सीनै पर्वत पर इस्राएल को दी गई दस आज्ञाओं ने नए नियम की नैतिक शिक्षा के लिए एक स्थाई पृष्ठभूमि स्थापित की। और हम आज संसार भर के स्मारकों और नैतिक शिक्षाओं में दस आज्ञाओं का प्रभाव भी देख सकते हैं। इसी प्रकार, परमेश्वर के लोगों के एक स्थाई राजवंश के मुखिया के रूप में परमेश्वर की ओर से दाऊद को चुनना, दाऊद के महान पुत्र के रूप में यीशु की वंशावली के लिए ऐतिहासिक स्पष्टीकरण प्रदान करता है। और निस्संदेह, दाऊद के पुत्र के रूप में यीशु आज भी सबके ऊपर राजा बना हुआ है, वही एकमात्र है जो हमें उद्धार दे सकता है। इन और अनगिनत अन्य तरीकों से, पुराना नियम हमारे समय के लिए ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है।

**समानांतर परिस्थितियाँ।** दूसरा, हम जानते हैं कि हम उसी संसार में रहते हैं जिसमें पुराने नियम के विश्वासी रहते थे क्योंकि न केवल हम अपने अनुभवों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को पहचानते हैं, बल्कि हम पुराने नियम और हमारे समय के बीच कई समानांतर स्थितियों को भी देखते हैं।

पुराने नियम के विश्वासियों के समान, हम परमेश्वर द्वारा रचे गए परंतु पाप में गिरे हुए संसार में रहते हैं। पुराने नियम में विश्वासयोग्य लोगों ने दूसरे लोगों और शैतानी ताकतों का विरोध सहा, और आज हम भी उसी विरोध को सहते हैं। पुराने नियम में, लोग विजय पाने के लिए परमेश्वर की सहायता पर निर्भर थे। हम भी उसकी सहायता पर निर्भर हैं। इस प्रकार की समानताएँ बहुत सी हैं। एक बार जब हम सतही असमानताओं से हटकर देखते हैं, तो हम देख सकते हैं कि हम ऐसी परिस्थितियों में रहते हैं जो पुराने नियम के लेखकों और उनके पाठकों के समान हैं।

पवित्रशास्त्र की सबसे दमदार विशेषताओं में से एक यह है कि यह पहले की घटनाओं के एक समूह और बाद की घटनाओं के बीच समानता को कैसे दर्शाता है। भविष्यवक्ताओं ने मिस्र से इस्राएल के निर्गमन को निर्वासन से इस्राएल की वापसी के साथ जोड़ा। सुसमाचारों ने यीशु के जीवन को मिस्र से इस्राएल के निर्गमन के साथ जोड़ा। प्रेरित पौलुस ने प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर बढ़ रहे इस्राएल और नए स्वर्ग और पृथ्वी की ओर मसीह का अनुसरण करनेवाले मसीहियों के जीवन के बीच समानता की ओर संकेत किया। यीशु ने मूसा द्वारा जंगल में साँप को ऊँचा उठाने और स्वयं को क्रूस पर ऊँचा उठाए जाने के बीच समानताओं को प्रकट किया। यह सूची बहुत लंबी है। धर्मविज्ञानी अक्सर इन समानताओं को "बाइबल-आधारित प्रारूप" कहते हैं। बाइबल-आधारित प्रारूप इस तथ्य पर आधारित होते हैं कि बाद की परिस्थितियाँ पहले की परिस्थितियों के समानान्तर हैं। और ये समानताएँ बड़े स्तर पर पाई जाती हैं क्योंकि हम आज भी उसी संसार में रहते हैं जिसमें पुराने नियम में परमेश्वर के लोग रहते थे।

समान परमेश्वर और समान संसार के अलावा, हम पुराने नियम और हमारे समय के बीच इसलिए भी संपर्कों को पा सकते हैं क्योंकि हम एक ही तरह के लोगों के साथ व्यवहार कर रहे हैं।



चलचित्र, अध्याय मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ - Thirdmill at thirdmill.org.

## वही लोग

पुराने नियम के प्राचीन लोगों और आधुनिक मनुष्यों के बीच कई अंतर पाए जाते हैं। परंतु पवित्रशास्त्र सिखाता है कि हम सब एक ही तरह के लोग हैं। हम ऐसी महत्वपूर्ण निरंतरताओं से जुड़े हुए हैं जो हमारे मतभेदों को दर्शाती हैं और हमें समय और संस्कृति से परे एकजुट भी करती हैं।

**परमेश्वर का स्वरूप।** कम से कम तीन तरीके हैं जिनमें हम पुराने नियम के लोगों के समान ही हैं। सब मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप हैं; हम सब पापी हैं; और सब लोग परमेश्वर के साथ वाचा में हैं। सबसे पहले, सब मनुष्य, चाहे वे कहीं भी या किसी भी समय में रहते हों, वे परमेश्वर के स्वरूप हैं। यह पूरे पुराने नियम और नए नियम में एक स्पष्ट शिक्षा है।

उत्पत्ति 1:27 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की। (उत्पत्ति 1:27)

उत्पत्ति 9:6 में हम पाते हैं कि मनुष्यजाति के पाप के द्वारा भ्रष्ट हो जाने के बाद भी मनुष्य परमेश्वर का स्वरूप हैं। वहाँ हम यह पढ़ते हैं :

> जो कोई मनुष्य का लहू बहाएगा उसका लहू मनुष्य ही से बहाया जाएगा, क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप के अनुसार बनाया है। (उत्पत्ति 9:6)

और इससे परे, नया नियम भी यह पुष्टि करता है कि सब लोग परमेश्वर के स्वरूप या समानता में हैं। याकूब 3:9 यह कहता है :

> जीभ से हम प्रभु और पिता की स्तुति करते हैं, और इसी से मनुष्यों को जो परमेश्वर के स्वरूप में उत्पन्न हुए हैं शाप देते हैं। (याकूब 3:9)

और जैसे कि पौलुस 1 कुरिन्थियों 11:7 में इसे कहता है :

> पुरुष... परमेश्वर का स्वरूप और महिमा है। (1 कुरिन्थियों 11:7)

> परमेश्वर द्वारा पुरुष और स्त्री को अपने स्वरूप में बनाने में, हम देखते हैं कि यह एक ऐसी बात है जो हम सब में हैं... वे सब जो पुराने नियम में थे, आदम और हव्वा भी पहले पुरुष और स्त्री थे। और इसलिए वह हट नहीं गया है, और यह एक आधारभूत... समानता है जो हम में उन सब पवित्र लोगों के साथ पाई जाती है जो हमसे पहले चले गए हैं और उन सब लोगों के साथ जो हमसे पहले चले गए हैं।
>
> — रेव्ह. तिमोथी माउंटफोर्ट

पूरे इतिहास में परमेश्वर के राज्य के उद्देश्यों को समझने के लिए परमेश्वर के स्वरूप के रूप में हमारी भूमिका को समझना महत्वपूर्ण है। बाद के अध्याय में हम इस बारे में और भी बात करेंगे कि परमेश्वर के स्वरूप में होने का क्या मतलब है। परंतु इस समय यह कहना पर्याप्त होगा कि कई समान बातें मनुष्य की विशेषता को दर्शाती हैं। अतीत में, कलीसिया ने विशेष रूप से इस तथ्य पर ध्यान केंद्रित किया है कि मनुष्य तर्कसंगत हैं, कि हमारे पास विशेष भाषाई क्षमताएँ हैं, और हम नैतिक या धार्मिक प्राणी हैं।

सच्चाई यह है कि पुराना नियम और नया नियम दोनों इस बात की पुष्टि करते हैं कि सब लोग परमेश्वर के स्वरूप में हैं, वे हमें चेतावनी देते हैं कि हम पुराने नियम के समय के लोगों और आधुनिक लोगों के बीच के अंतरों को बढ़ा-चढ़ाकर न देखें। निस्संदेह, हम सब कई रूपों में अलग-अलग हैं, परंतु वास्तव में, हम जो आज रहते हैं, प्राचीन लोगों से पूरी तरह से अलग नहीं हैं। हालाँकि हम बिल्कुल उनके जैसे नहीं हैं, फिर भी हम यह मान सकते हैं कि जो तर्कसंगत, भाषाई और नैतिक विशेषताएँ उनके जीवन में पाई जाती हैं, वे हमारे जीवन में भी पाई जाती हैं। वे वैसा ही सोचते थे जैसा हम सोचते हैं। वे भाषा को वैसे ही समझते थे जैसे हम समझते हैं। वे भी हमारी ही तरह नैतिकता और विश्वास के सवालों से जूझते थे। और इन कारणों से, हम आश्वस्त हो सकते हैं कि हम पुराने नियम को अपने जीवन में लागू कर सकते हैं। जिन लोगों ने सबसे पहले इसे लिखा और सबसे पहले इसे प्राप्त किया, वे हमारी तरह ही परमेश्वर के स्वरूप थे।

**पापपूर्ण।** दूसरा, हम भी पुराने नियम के लोगों के समान ही हैं क्योंकि सब मनुष्य पापी हैं।

रोमियों 3:12 के शब्दों पर ध्यान दें जहाँ पौलुस ने भजनों से उद्धृत करते हुए लोगों की पापपूर्ण दशा का वर्णन किया। उसने लिखा :

> **सब भटक गए हैं, सब के सब निकम्मे बन गए हैं; कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं। (रोमियों 3:12)**

प्रेरित ने स्पष्ट किया कि सब लोगों ने पाप किया है। और यह केवल नए नियम की शिक्षा नहीं है। 1 राजाओं 8:46 में सुलैमान ने मंदिर के समर्पण पर वास्तव में यही बात कही जब उसने कहा :

> **निष्पाप तो कोई मनुष्य नहीं है। (1 राजाओं 8:46)**

> **विधिवत धर्मविज्ञान में, इस शिक्षा को "संपूर्ण भ्रष्टता" के रूप में जाना जाता है। और इसका अर्थ यह है कि मनुष्य के अस्तित्व की संपूर्णता में, उसकी सोच, भावना और व्यवहार सब पाप से भ्रष्ट हो गया है, इसलिए यह मूल धारणा है कि वह जो कुछ भी करता है, वह परमेश्वर की आज्ञाओं और पवित्र मानकों की अनाज्ञाकारिता में करता है। इसलिए हाँ, पापी स्वभाव जैसी कोई बात अवश्य होती है।**
>
> **— डॉ. लुईस ओर्टेज़ा**

क्योंकि हम पापी हैं, परमेश्वर के पतित स्वरूप हैं, इसलिए हमारे लिए यह समझना मुश्किल नहीं है कि पुराने नियम के लेखकों ने पाप पर इतना ध्यान क्यों दिया। हम इस स्तर पर पुराने नियम से जुड़ते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि हम पापी हैं — ठीक वैसे ही जैसे पुराने नियम के मूल प्राप्तकर्ता थे और तब से हर कोई व्यक्ति है। हम यह भी समझते हैं कि क्यों पुराना नियम पापियों के *छुटकारे* पर ध्यान केंद्रित करता है। मनुष्यजाति के पाप में पतन के समय से, सभी लोगों को छुटकारे की आवश्यकता रही है। यह तथ्य भी हमें पुराने नियम के प्राचीन संसार से जोड़ता है।

**वाचा।** तीसरा, हम एक ही प्रकार के लोग हैं क्योंकि पुराने नियम के समय में, तब और अब के बीच के समय में, और आज भी, सब लोग वाचा के द्वारा परमेश्वर से बंधे हुए हैं।

पुरान नियम और नया नियम दोनों लगातार सब लोगों के वाचा द्वारा परमेश्वर से बंधे होने की बात करते हैं। जैसा कि हम बाद के अध्याय में देखेंगे, आदम और नूह के साथ परमेश्वर की वाचा को "सार्वभौमिक" वाचा कहा गया है क्योंकि वे सब मनुष्यों के साथ बाँधी गई थीं। ये वाचाएँ सब लोगों को उनके दयालु और परोपकारी राजा के रूप में परमेश्वर के प्रति उत्तरदाई ठहराती हैं। पुराने नियम का बाकी हिस्सा मुख्य रूप से विशेष वाचाओं पर केंद्रित है जो परमेश्वर ने इस्राएल राष्ट्र के साथ बाँधी थीं, जिन्हें



चलचित्र, अध्याय मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ - Thirdmill at thirdmill.org.

अक्सर "राष्ट्रीय" वाचाएँ कहा जाता है। इस्राएल के लोग अब्राहम, मूसा और दाऊद के साथ उसकी वाचाओं के द्वारा और बाद में, उस नई वाचा के द्वारा परमेश्वर से बंधे थे जिनकी भविष्यवाणी इस्राएल के भविष्यवक्ताओं ने की थी। और हम सब आज उसी दशा में हैं। प्रत्येक व्यक्ति आदम और नूह के साथ उसकी वाचाओं द्वारा परमेश्वर से बंधा हुआ है। और कलीसिया आज पुराने नियम में इस्राएल राष्ट्र के साथ उसकी विशेष वाचाओं और मसीह में नई वाचा के द्वारा परमेश्वर से बंधी हुई है। आपको याद होगा कि निर्गमन 19:6 में, परमेश्वर ने सीनै पर्वत पर इस्राएल के साथ अपने विशेष वाचाई संबंध के बारे में इस प्रकार बात की थी :

> **तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे। (निर्गमन 19:6)**

1 पतरस 2:9 में प्रेरित पतरस ने इस अनुच्छेद को उद्धृत किया, परंतु उसने इसे नए नियम की कलीसिया पर लागू किया। जैसे कि उसने कहा :

> **पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो। (1 पतरस 2:9)**

यहाँ पतरस ने मसीही कलीसिया पर उन शब्दों को लागू किया जो परमेश्वर ने पुराने नियम में अपने विशेष वाचाई लोगों अर्थात् इस्राएल से कहे थे। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि मसीह के अनुयायी अब मसीह में पाई जानेवाली नई वाचा के द्वारा परमेश्वर से जुड़ गए हैं। यह संपर्क की एक स्थाई रेखा है जो पूरे इतिहास में चलती है।

अब जब हमने पुराने नियम को लागू करने में आनेवाली उन चुनौतियों का जिन पर हमें विजय पानी है, अध्ययन कर लिया है और पुराने नियम के साथ अपने संपर्कों की जांच कर ली है, तो हमें अपना ध्यान उन विकासों की ओर लगाना चाहिए जिन्हें हमें स्वीकार करना चाहिए यदि हमें अपने समय में पुराने नियम को लागू करना है।

## विकास

जैसा कि हमने पहले देखा, आज हमारे जीवन में पुराने नियम को लागू करने के लिए पुराने नियम और नए नियम दोनों में बाइबल-आधारित विश्वास में हुए कई ऐतिहासिक विकासों का शामिल होना जरूरी है। पुराना नियम, नया नियम और हमारा मसीही विश्वास आज एक धर्म, एक विश्वास को प्रस्तुत करते हैं। फिर भी, हमें हमेशा यह स्वीकार करना चाहिए कि कई प्रकार के विकास हुए हैं।

इन विकासों का वर्णन करने के कई तरीके हैं, परंतु हम तीन प्रमुख प्रकारों पर प्रकाश डालेंगे : युग-संबंधी विकास, सांस्कृतिक विकास और व्यक्तिगत विकास। सबसे पहले, परमेश्वर ने स्वयं को और अपनी इच्छा को युगों या समयों में अपने लोगों पर प्रकट किया है।

### युग-संबंधी

बाइबल-आधारित इतिहास इस बात का एक लंबा विवरण है कि जैसे-जैसे इतिहास मसीह में अपने ईश्वर-निर्धारित अंत की ओर बढ़ता रहा, तो परमेश्वर ने अपने लोगों के सामने स्वयं को कैसे प्रकट किया। इस इतिहास की खोज करने के कई अलग-अलग तरीके हैं, परंतु एक सहायक तरीका इसे प्रमुख अवधियों या युगों में विभाजित करना है जो अपने लोगों के साथ परमेश्वर की वाचा के अनुरूप हैं। इनमें से प्रत्येक वाचाई अवधि में, परमेश्वर ने स्वयं को और अधिक प्रकट किया। सीधे शब्दों में कहें तो, परमेश्वर ने स्वयं को नूह के समक्ष आदम से अधिक प्रकट किया। उसने नूह की तुलना में अब्राहम के समक्ष स्वयं को अधिक प्रकट किया। मूसा को अब्राहम की तुलना में अधिक प्रकाशन मिला। और परमेश्वर ने दाऊद को मूसा से भी अधिक प्रकाशन दिया। और नए नियम के युग में, परमेश्वर ने पहले से

कहीं अधिक प्रकट किया है। इब्रानियों के लेखक ने इब्रानियों 1:1-2 में इस बात पर बल दिया जब उसने लिखा :

> पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा थोड़ा करके और भाँति-भाँति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कर, इन अन्तिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं। (इब्रानियों 1:1-2)

बाइबल के लेखकों की तरह ही, मसीहियों ने बाइबल के इतिहास को अलग-अलग तरीकों से अलग-अलग अवधियों या युगों में विभाजित किया है। कुल मिलाकर, मसीहियों ने स्वीकार किया है कि बाइबल के इतिहास में सबसे बड़ा युग-संबंधी विकास पुराने नियम और नए नियम के बीच हुआ। यह युग-संबंधी विभाजन आज परमेश्वर के वचन को लागू करने के लिए महत्वपूर्ण है। और सदियों से मसीहियों ने यह प्रश्न पूछा है, "पुराने नियम की शिक्षाएँ नए नियम के युग में कैसे लागू होती हैं?

विश्वासयोग्य मसीही सही रूप में मानते हैं कि पुराना नियम हम पर लागू होता है, परंतु हमारे युग में इसके संदेश को लागू करने के उनके पास अलग-अलग तरीके हैं। एक छोर पर वे लोग हैं जो बाइबल के इतिहास के खंडित दृष्टिकोण को बढ़ावा देते हैं। ये मसीही विशेष रूप से पुराने और नए नियम के युगों के बीच की *भिन्नताओं* पर बल देते हैं। उनका मानना है कि हमें पुराने नियम की केवल उन शिक्षाओं को आधुनिक विश्वासियों पर लागू करना चाहिए जिनकी नए नियम में स्पष्ट रूप से पुष्टि की गई है। अन्यथा, पुराना नियम मसीह के अनुयायियों पर लागू नहीं होता है।

दूसरे छोर पर कई चरम मान्यताएँ हैं जो बाइबल के विश्वास के एक सपाट दृष्टिकोण को बढ़ावा देती हैं। ये मसीही पुराने और नए नियम की अवधियों की *निरंतरता* पर बल देते हैं। इस दृष्टिकोण में, जब तक नया नियम पुराने नियम की शिक्षा को स्पष्ट रूप से अस्वीकार या संशोधित नहीं करता है, तब तक मसीहियों को इसका उन लोगों की तरह पालन करना जरूरी है जो मसीह से पहले रहते थे।

इस अध्याय में, हम बाइबल के विश्वास के "विकासात्मक दृष्टिकोण" पर बल देते हुए इन दोनों चरम मान्यताओं को दूर करेंगे। इस दृष्टिकोण से, संपूर्ण पुराने नियम को नए नियम के मसीहियों पर लागू किया जाना जरूरी है। परंतु हमें यह भी स्वीकार करना चाहिए कि पुराने नियम का हर आयाम उसी के कारण विकसित हुआ है, जो परमेश्वर ने मसीह में किया है। पुराने नियम की सब शिक्षाएँ मसीहियों पर लागू होती हैं, परंतु हमेशा नए नियम के प्रकाश में।

> पुराने नियम और नए नियम के बीच का संबंध एक बड़े वाद-विवाद का विषय है। और यह सचमुच आज भी काफी विचार-विमर्श का विषय है। और इस विकास को जिसे हम "प्रगतिशील प्रकाशन" कहते हैं, देखने का एक तरीका यह है — परमेश्वर ने आदि में सब कुछ प्रकट नहीं किया — धर्मविज्ञान के विकास का इतिहास, अर्थात् नए नियम के साथ संबंध में पुराने नियम की शिक्षा, वास्तव में आरंभ में आंशिक प्रकाशन का प्रश्न है और फिर कलीसिया के धर्मविज्ञान की वास्तविकता को लिखने में यीशु और प्रेरितों की शिक्षा के साथ नए नियम में एक पूर्ण प्रकाशन का प्रश्न है।
>
> — डॉ. डेनियल स्टेफन

गलातियों 3:24 में पौलुस ने पुराने नियम और नए नियम के विश्वास के बीच के संबंध के बारे में इस प्रकार बात की :

> व्यवस्था मसीह तक पहुँचाने के लिये हमारी शिक्षक हुई है। (गलातियों 3:24)

इस पद में, शब्द "शिक्षक" ग्रीक संज्ञा *पेडागोगोस* (*παιδαγωγός*) का अनुवाद है। यह शब्द एक शिक्षक या अभिभावक को दर्शाता है जो बच्चे को निर्देश, मार्गदर्शन और अनुशासन प्रदान करता है जब वह परिपक्व हो रहा होता है। इसलिए जैसा कि पौलुस ने यहाँ संकेत दिया है, पुराने नियम की शिक्षाएँ एक बच्चे को दिए गए निर्देशों की तरह थीं, परंतु नए नियम की शिक्षाएँ एक वयस्क उत्तराधिकारी को दिए गए निर्देशों की तरह हैं।

हम सब जानते हैं कि माता-पिता छोटे बच्चों को "सड़क पर मत जाओ," "आग से दूर रहो" जैसी बातें सिखाते हैं। परंतु जब बच्चे वयस्क हो जाते हैं, तो हम उन्हें सड़क से दूर रहने या आग से दूर रहने की चेतावनी नहीं देते हैं। आख़िरकार, वे वयस्क हैं। फिर भी, माता-पिता अपने वयस्क बच्चों से अपेक्षा करते हैं कि वे अपने बचपन के नियमों की बुद्धिमानी को याद रखें। हम वयस्कों से अपेक्षा करते हैं कि वे याद रखें कि सड़कें और आग खतरनाक हैं और वे उनके प्रति सावधानी बरतें। हमारे लिए किसी वयस्क के साथ छोटे बच्चे जैसा व्यवहार करना मूर्खता होगी। परंतु वयस्कों के लिए यह भूल जाना बहुत ही मूर्खतापूर्ण होगा जो उन्होंने अपने बचपन के सबकों से सीखा था।

कई रूपों में, पुराना नियम एक बच्चे को दिए गए नियमों से मिलता जुलता है। इसे पुराने नियम के इस्राएल के लोगों की आत्मिक दशा के लिए तैयार किया गया था जब वे परिपक्व हो रहे थे। नया नियम उन लोगों के लिए निर्देश है जो मसीह में परमेश्वर के प्रकाशन के बाद रहते हैं। यदि नए नियम के विश्वासियों के रूप में हम पुराने नियम का वैसे पालन करते हैं जैसे पुराने नियम के समय में लोग करते थे, तो हम मसीह के महत्व का इनकार करते हैं। परंतु यदि हम पुराने नियम में सिखाई गई बुद्धि की बातों को अस्वीकार करते हैं, तो हम मसीह द्वारा पुराने नियम के अधिकार को दिए गए सम्मान का इनकार करते हैं। मसीह के विश्वासयोग्य अनुयायियों के रूप में, हमें पुराने नियम के अधिकार के प्रति समर्पित रहना है, परंतु हमें ऐसा उन लोगों के रूप में करना है जिन पर युग की पूर्णता आ गई है।

युग-संबंधी विकास के अतिरिक्त, यदि हमें पुराने नियम को अपने समय पर लागू करना है, तो हमें सांस्कृतिक विकास पर भी विचार करना चाहिए।

## सांस्कृतिक

जब हम पुराने नियम का अध्ययन करते हैं, तो हमें पुराने नियम में प्रस्तुत किए गए सांस्कृतिक प्रारूपों और अपने संसार के सांस्कृतिक प्रारूपों के बीच समानताओं और भिन्नताओं को ध्यान में रखना चाहिए। हमारे समय की कौन-सी सांस्कृतिक विशेषताएँ अब्राहम के समय से बहुत मिलती-जुलती हैं? हमारी संस्कृति दाऊद की संस्कृति की तरह कैसे है? पुराने नियम के प्राचीन दिनों से मानवीय संस्कृति कैसे बदल गई है? कौन से रीति-रिवाज और परंपराएँ भिन्न हैं? यदि हमें पुराने नियम को आधुनिक जीवन में जिम्मेदारी से लागू करना है तो हमें इन सवालों का जवाब देना होगा।

> हम 21वीं सदी में रहते हैं, और हम अपनी संस्कृति और पुराने नियम की संस्कृति को अलग-अलग पाते हैं। इसलिए, हमें वास्तव में बाइबल की संस्कृति में गहराई से उतरने की आवश्यकता है ताकि हम वचन के लेख को समझ सकें। इस प्रकार, हम जिस तरह से काम करते हैं वह पुराने नियम से बहुत अलग है। इसलिए, हमें यह समझने के लिए वास्तव में पुराने नियम के संदर्भ और संस्कृति को देखने की जरूरत है कि पुराने नियम में परमेश्वर अपने लोगों के जीवन में क्या कर रहा है।
>
> — डॉ. डेनियल सिमांगो

हमें न केवल युग-संबंधी और सांस्कृतिक विकास पर विचार करना चाहिए, बल्कि पुराने नियम को अपने समय में लागू करने के लिए हमें व्यक्तिगत विकासों पर भी ध्यान देना चाहिए।



चलचित्र, अध्याय मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ - Thirdmill at thirdmill.org.

### व्यक्तिगत

पुराने नियम के लोगों और हमारे समकालीन संसार में रहनेवाले लोगों के बीच बहुत सी समानताएँ और बहुत सी भिन्नताएँ दोनों हैं। यदि हम पुराने नियम के प्राचीन लेखों को उचित रूप से लागू करने की आशा करते हैं, तो हमें ऐसे प्रश्न पूछने की जरूरत है : हमारे व्यक्तिगत जीवनों की उन लोगों से तुलना कैसे की जाती है जिन्हें हम पुराने नियम में देखते हैं? समाज में हमारी क्या भूमिकाएँ हैं? उन भूमिकाओं की पुराने नियम के लोगों की भूमिकाओं से तुलना कैसे की जाती है? हमारी आत्मिक दशा कैसी है? हमारे विचार, कार्य और भावनाएँ उन लोगों की तुलना में कैसे हैं जिन्हें हम पुराने नियम के समय के लोगों में देखते हैं? प्राचीन पुराने नियम के लोगों और आधुनिक लोगों के बीच समानताओं और भिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए, हम बेहतर ढंग से समझ सकते हैं कि पुराने नियम को अपने समय में कैसे लागू किया जाए।

## उपसंहार

इस अध्याय में, हमने पूछा है कि हमें पुराने नियम का अध्ययन क्यों करना चाहिए। हमने उन कठिनाइयों को स्वीकार किया है जिनका सामना हम अपने और इस प्राचीन पुस्तक के बीच की दूरी के कारण करते हैं, साथ ही हमने हमारे सामने आनेवाली दूरी के कारणों और दूरी के प्रकारों को भी शामिल किया है। हमने यह भी देखा है कि नया नियम हमारे समय के लिए पुराने नियम की प्रासंगिकता की दृढ़ता से पुष्टि करता है, विशेषकर यीशु और पौलुस की शिक्षाओं के द्वारा। और हमने अपने जीवन में पुराने नियम के वर्तमान प्रयोग से जुड़ी चुनौतियों, संपर्कों और विकासों पर विचार करने के द्वारा उन मार्गों की रूपरेखा तैयार की है जिनका हमें अनुसरण करना चाहिए।

अक्सर, मसीह के अनुयायी पुराने नियम के बारे में बहुत कम जानकारी से संतुष्ट रहते हैं और अपने लिए केवल नए नियम को परमेश्वर के वचन के रूप में देखते हैं। परंतु नया नियम जितना भी महत्वपूर्ण हो, यह उन मसीहियों के लिए कभी पर्याप्त नहीं होगा जो अपने विश्वास में बढ़ने की आशा करते हैं। हमें पुराने नियम की भी आवश्यकता है। पुराने नियम का अध्ययन करने में बहुत कड़ा परिश्रम चाहिए, परंतु यह हर प्रयास के योग्य है। पुराना नियम परमेश्वर का वचन है। और मसीह के विश्वासयोग्य चेलों के रूप में, हमें स्वयं को इन वचनों के प्रति समर्पित करना चाहिए जैसे मसीह ने स्वयं को इनके प्रति समर्पित किया था। जब हम ऐसा करेंगे, तो हम पाएँगे कि पुराना नियम एक अद्‌भुत उपहार है जिसे परमेश्वर ने हमें दिया है कि हम हर जगह और हर युग में इसका अनुसरण करें।



चलचित्र, अध्याय मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ - Thirdmill at thirdmill.org.